केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क-bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक
भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com
के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :46 अंक 77 बुधवार 9 अक्टूबर 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

कालरात्रि : काल से रक्षा करती है मां दुर्गा की सातवीं शक्ति...

एकवेणी जपाकर्णपुरा नग्ना खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी।।
वामपादोल्लसल्लोहलताकण्टकभूषणा।
वर्धनमूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयंकरी।।

नाम से अभिव्यक्त होता है कि मां दुर्गा की यह सातवीं शक्ति कालरात्रि के नाम से जानी जाती है अर्थात जिनके शरीर का रंग घने अंधकार की तरह एकदम काला है। नाम से ही जाहिर है कि इनका रूप भयानक है। सिर के बाल बिखरे हुए हैं और गले में विद्युत की तरह चमकने वाली माला है। अंधकारमय स्थितियों का विनाश करने वाली शक्ति हैं कालरात्रि। काल से भी रक्षा करने वाली यह शक्ति है।

इस देवी के तीन नेत्र हैं। ये तीनों ही नेत्र ब्रह्मांड के समान गोल हैं। इनकी सांसों से अग्नि निकलती रहती है। ये गर्दभ की सवारी करती हैं। ऊपर उठे हुए दाहिने हाथ की वर मुद्रा भक्तों को वर देती है। दाहिनी ही तरफ का नीचे वाला हाथ अभय मुद्रा में है। यानी भक्तों हमेशा निडर, निर्भय रहो।

बाईं तरफ के ऊपर वाले हाथ में लोहे का कांटा तथा नीचे वाले हाथ में खड्ग है। इनका रूप भले ही भयंकर हो लेकिन ये सदैव शुभ फल देने वाली मां हैं। इसीलिए ये शुभंकरी कहलाईं अर्थात इनसे भक्तों को किसी भी प्रकार से भयभीत या आतंकित होने की कतई आवश्यकता नहीं। उनके साक्षात्कार से भक्त पुण्य का भागी बनता है।

कालरात्रि की उपासना करने से ब्रह्मांड की सारी सिद्धियों के दरवाजे खुलने लगते हैं और तमाम असुरी शक्तियां उनके नाम के उच्चारण से ही भयभीत होकर दूर भागने लगती हैं। इसलिए दानव, दैत्य, राक्षस और भूत–प्रेत उनके स्मरण से ही भाग जाते हैं।

ये ग्रह बाधाओं को भी दूर करती हैं और अग्नि, जल, जंतु, शत्रु और रात्रि भय दूर हो जाते हैं। इनकी कृपा से भक्त हर तरह के भय से मुक्त हो जाता है।

एक नजर

मुण्डेरवा में डायरेक्टर पद के लिये नामांकन 10 को

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सहकारी गन्ना विकास समिति लिमिटेड मुण्डेरवा के डायरेक्टर के चुनाव हेतु नामांकन 10 अक्टूबर गुरुवार को दिन में 10 बजे से होगा। चुनावी सरगर्मियां तेज हो गई है। भारतीय किसान यूनियन के प्रदेश सचिव एवं सहकारी गन्ना विकास समिति लिमिटेड मुण्डेरवा निवर्तमान अध्यक्ष दिवान चन्द पटेल अपना नामांकन करेंगे। उनके नामांकन में भाकियू के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बलराम सिंह लम्बरदार, राष्ट्रीय सचिव घनश्याम वर्मा, पूर्वान्चल अध्यक्ष अनूप चौधरी के साथ ही जनपद एवं मण्डल के अनेक पदाधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य हिस्सा लेंगे।

दिवान चन्द पटेल ने प्रशासन से मांग किया है कि नामांकन और चुनाव प्रक्रिया पूरे पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराया जाय। यदि सत्ता के दबाव में लोकतंत्र के हत्या की कोशिश हुई तो भाकियू चुप नहीं बैठेगी।

वन स्टाप सेण्टर का निरीक्षण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । उ.प्र. राज्य महिला आयोग की श्रीमती चारू चौधरी ने जिला महिला चिकित्सालय एवं वन स्टाप सेण्टर का औचक निरीक्षण किया। उन्होने वन स्टाप सेण्टर के रसोई घर, आश्रय गृह तथा संबंधित आवश्यक रजिस्टरों का अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान उन्होने कहा कि यहॉ के जो साइकोलोजिस्ट हैं, यह सुनिश्चित करे कि यहॉ पर आने वाले मरीजो की काउंसलिंग अच्छे से की जाय और उन्हें शिक्षा के प्रति जागरूक किया जाय। इसके साथ ही सिलाई, कढाई में रूचि रखने वाली महिलाओं को प्रशिक्षण दिलाया जाय निरीक्षण करते हुए संबंधित स्टाफ नर्सो को निर्देशित किया कि नवजात शिशुओं के माता–पिता व अभिभावक को शिशुओं की देखभाल करने के लिए आवश्यक जानकारी साझा किया जाय।

हरियाणा में तीसरी बार भाजपाः जम्मू-कश्मीर में नेशनल कान्फ्रेंस और कांग्रेस गठबंधन सरकार

नई दिल्ली (आभा)। जम्मू और कश्मीर और हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजों का ऐलान होचुका है। भारत निर्वाचन आयोग के ताजा आंकड़ों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने हरियाणा में बहुमत हासिल कर लिया है। हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी लगातार तीसरी बार सरकार बनाएगी। वहीं, जम्मू और कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस गठबंधन सरकार बनाने जा रही है।

पीएम मोदी ने एक्स पर पोस्ट किया कि भारतीय जनता पार्टी को एक बार फिर स्पष्ट बहुमत देने के लिए मैं हरियाणा की जनशक्ति को नमन करता हूं। यह विकास और सुशासन की राजनीति की जीत है। मैं यहां के लोगों को विश्वास दिलाता हूं कि उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए हम कोई कोर–कसर नहीं छोड़ेंगे। इस महाविजय के लिए अथक परिश्रम और पूरे समर्पण भाव से काम करने वाले अपने सभी कार्यकर्ता साथियों को भी मेरी बहुत–बहुत बधाई! आपने ना केवल राज्य की जनता–जनार्दन की भरपूर सेवा की है, बल्कि विकास के हमारे एजेंडे को भी उन तक पहुंचाया है। इसी का नतीजा है कि भाजपा को हरियाणा में यह ऐतिहासिक जीत हासिल हुई है।

नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता उमर अब्दुल्ला जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री होंगे, श्रीनगर में नेशनल कॉन्फ्रेंस प्रमुख फारूक अब्दुल्ला ने यह घोषणा की। जम्मू–कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस केंद्र शासित प्रदेश में विधानसभा चुनावों में जीत चुकी है। फारूक अब्दुल्ला ने यह घोषणा तब की है, जब यह स्पष्ट हो गया कि कांग्रेस–एनसी गठबंधन 10 वर्षों में जम्मू–कश्मीर में पहला विधानसभा चुनाव जीतेगा। उन्होंने कहा कि 10 वर्षों के बाद लोगों ने हमें अपना जनादेश दिया है।

ताजा आंकड़ों के अनुसार, भाजपा हरियाणा की 90 सीटों में से 45 पर जीत हासिल कर चुकी है और 3 पर आगे चल रही है। वहीं, कांग्रेस ने 35 सीटों पर जीत हासिल कर ली है और 2 सीटों पर बढ़त बनाए हुए है। खास बात है कि भाजपा ने 2019 विधानसभा चुनाव का आंकड़ा पार कर लिया है। उस दौरान पार्टी ने 40 सीटों पर जीत हासिल की थी।

जम्मू और कश्मीर विधानसभा चुनाव की सभी 90 सीटों के नतीजे आ चुके हैं। सबसे ज्यादा जम्मू और कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस ने 42 सीटें जीती हैं। भाजपा ने 29 और कांग्रेस पार्टी महज 6 सीटें ही जीत पाई। महबूबा मुफ्ती की पार्टी ने तीन सीटें जीती हैं। आम आदमी पार्टी ने भी एक सीट जीती है। 7 सीटें निर्दलीयों के खाते में गई हैं।

90 सीटों वाले हरियाणा में मतदान 5 अक्टूबर को एक ही चरण में पूरा हुआ था, जिसमें अनुमानित 65 फीसदी मतदान दर्ज किया गया था। वहीं, 90 सीटों वाले ही जम्मू और कश्मीर में तीन चरणों में मतदान की प्रक्रिया हुई थी। यहां कुल 63.88 फीसदी मतदान दर्ज किया गया था। इनमें पहले चरण में 61.38, दूसरे चरण में 57.31 और 1 अक्टूबर को हुए तीसरे चरण में वोटिंग पर्सेंट 69.69 प्रतिशत रहा था।

ब्राह्मण महासभा में हुआ महेश शुक्ल का फूल मालाओं के साथ भव्य स्वागत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मंगलवार को उत्तर प्रदेश गो सेवा आयोग के उपाध्यक्ष दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री महेश शुक्ल के बस्ती पहुंचने पर स्थान–स्थान पर भव्य स्वागत किया गया। इसी कड़ी में मालवीय रोड स्थित ब्राह्मण महासभा के परिसर में राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. अशोक कुमार शुक्ल, युवा ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हेमन्त मिश्र के संयोजन में महेश शुक्ल का फूल मालाओं के साथ भव्य स्वागत किया गया।

महेश शुक्ल का स्वागत करने वालों में मुख्य रूप से शम्भूनाथ मिश्र, विजय बिहारी तिवारी, विकास उपाध्याय, डा. वीरेन्द्र त्रिपाठी, प्रशान्त पाण्डेय, वीरेन्द्र कमार पाण्डेय 'लल्लू' अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय 'शिबलू', अभिनव उपाध्याय, राधेश्याम पाण्डेय के साथ ही ब्राम्हण महासभा के अनेक पदाधिकारियों, सदस्यों ने महेश शुक्ल का स्वागत किया। युवा ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हेमन्त मिश्र ने महेश शुक्ल को भगवान परशुराम का चित्र भेंट किया।

हरियाणा में भाजपा के नीतियों की जीत- नितेश

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मंगलवार को हरियाणा विधानसभा चुनाव परिणाम आने के पश्चात अपनी प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा जिला का समिति नितेश शर्मा ने कहा कि हरियाणा में फिर एक बार नीतियों की जीत हुई है। भारतीय जनता पार्टी के सम्मानित कार्यकर्ता पदाधिकारी एवं मतदाता बधाई के असली हकदार हैं।

प्रेस को जारी विज्ञप्ति में भाजपा नेता नितेश शर्मा ने कहा कि विपक्ष लगातार झूठ फैलाने का काम कर रही थी। लेकिन हरियाणा की सम्मानित जनता ने उनके झूठ को सिरे से नकार दिया। कहा कि भाजपा सरकार की जो काम करने की नीतियां और उपलब्धियां हैं। उस ओर हरियाणा की जनता ने अपना मुहर लगाया है। भाजपा नेता ने कहा कि हरियाणा में किसी पार्टी की तीसरी बार सरकार नहीं बनी थी। भाजपा हरियाणा में तीसरी बार सरकार बनाकर नया इतिहास रचेगी।

मिथुन चक्रवर्ती को दादा साहेब फाल्के अवार्ड

नई दिल्ली (आभा)। 70वें नेशनल फिल्म अवॉर्ड्स समारोह में दिग्गज अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती को दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। मिथुन चक्रवर्ती हाथ में फ्रैक्चर होने के बावजूद खुद अवॉर्ड लेने पहुंचे और इस मौके पर वह खुद को भावुक होने से नहीं रोक सके। मिथुन चक्रवर्ती के नाम का ऐलान किए जाने के बाद वह सहारा लेकर अपनी कुर्सी से उठे और फिर मंच पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने उन्हें सम्मानित किया। मिथुन चक्रवर्ती की आंखों में खुशी के आंसू छलकते साफ देखे जा सकते थे। मिथुन चक्रवर्ती ने कहा कि शायद जितनी तकलीफें मैंने उठाईं भगवान ने उन्हें सूद समेत वापस कर दिया।

मिथुन चक्रवर्ती ने यह सम्मान पाने के बाद राष्ट्रपति मुर्मु और ऑडियंस में बैठे सभी लोगों का अभिवादन किया। मिथुन चक्रवर्ती ने यह सम्मान पाने के बाद कहा, "मुझे आप सबकी दुआओं से दोबारा इस मंच पर आने का मौका मिला है। मुझे कुछ भी थाली में परोसकर नहीं दिया गया, मैंने बहुत संघर्ष किया है। लेकिन आज यह अवॉर्ड पाने के बाद, मेरी भगवान से सारी शिकायतें दूर हो गईं। भगवान तेरा शुक्रिया, तुमने मुझे सब कुछ सूद समेत वापस कर दिया।"

पेंशनरों की समस्याओं का हो प्रभावी निस्तारण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। पेंशनरों की समस्याओं का निस्तारण तत्परता से किया जायें। समागार में पेंशन अदालत की बैठक को सम्बोधित करते हुए उक्त निर्देश मण्डलायुक्त अखिलेश सिंह ने अपर निदेशक कोषागार एवं पेंशन को दिया है। उन्होने कहा है कि शासन के मानक के अनुरूप देयको के भुगतान में विचलन नही होना चाहिए। जिम्मेदार अधिकारीगण यह सुनिश्चित करायें कि किसी भी पात्र व्यक्ति का क्लेम ना रूकें। चिकित्सा प्रतिपूर्ति के मामलों में सीएमओ कार्यालय संतकबीर नगर से लापरवाही बरते जाने की शिकायत को गम्भीरता से संज्ञान लिया। उन्होने कहा कि मण्डल के सभी सीएमओ अपने कार्यालय कि लम्बित मामलों की जॉच करा लें तथा यथाशीघ्र निस्तारित करा दें अन्यथा की स्थिति में मेरे द्वारा औचक निरीक्षण किया जायेंगा तथा कमी पाये जाने पर संबंधित के विरूद्ध विभागीय कार्यवाही की जायेंगी।

पेंशन अदालत में प्रस्तुत प्रकरणों में कलिमुन्निशा तथा राजेन्द्र के मामलों पर विचार करते हुए अपर निदेशक पेंशन एवं कोषागार आत्म प्रकाश बाजपेयी ने बताया कि शीघ्र ही दोनों प्रकरण का निस्तारण करा दिया जायेंगा। विभागीय स्तर पर सभी कार्यालयों में समन्वय स्थापित करते हुए मुख्य कोषाधिकारी के माध्यम से पत्राचार किया जायेंगा, जिससे अल्प अवधि में पेंशनरों की प्राप्त शिकायतों को निस्तारित किया जा सकें। बैठक में मुख्य कोषाधिकारी अशोक प्रजापति, एसडीएम मनोज प्रकाश, सिद्धार्थनगर प्रियंका सिंह, संतकबीर नगर अरूण कुमार एवं उमेश कुमार, नवनीत तिवारी, रमेश कुमार सहित पेंशनर्स उपस्थित रहें।

हरियाणा की जीत से भाजपा में खुशी की लहर

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। हरियाणा प्रदेश में लगातार तीसरी बार भाजपा की सरकार बनने और जम्मू कश्मीर में भाजपा सबसे बड़ी दल उभर कर सामने आई है इसके उपलक्ष्य में बस्ती में भाजपा कार्यकर्ता खुशी से झूम उठे हैं। हरियाणा में भाजपा की सरकार बनने पर बस्ती भाजपा कार्यालय पर जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्र के नेतृत्व में लोगों ने लड्डू बांटकर खुशियां मनाई। कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं देते हुए पूर्व सांसद हरीश द्विवेदी ने कहा कि प्रदेश में लगातार तीसरी बार भाजपा की सरकार बनने से प्रदेश का समूचित विकास होगा। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं की मेहनत और जनता के समर्थन से हरियाणा में भाजपा ने इतिहास रचते हुए विपक्षी दलों का सुपड़ा साफ कर दिया है। जातिवाद, परिवारवाद, गुंडाराज व माफियावाद को तोड़कर जनता ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के कुशल नेतृत्व में राष्ट्रवाद और विकासवाद पर वोट दिया है। बीजेपी

हरियाणा में नया इतिहास बनाई है क्योंकि 1966 में हरियाणा के गठन के बाद पहली बार कोई पार्टी तीसरी बार सरकार बना रही है।

जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्र हरियाणा में कांग्रेस और कांग्रेसी आपस में लड रहे थे वही भाजपाई सेवा के लिए आशीर्वाद मांग रहे थे। उत्तर प्रदेश की तरह हरियाणा में डेवलेपमेंट और गुड गवर्नेंस के आधार पर युवाओं को बिना पर्ची बिना खर्ची की नौकरिया मिली है। हरियाणा के ईमानदार मुख्यमंत्री के नेतृत्व में सभी वर्गो ने नरेन्द्र मोदी के कल्याणकारी नीतियां मोहर लगाई है।

इस अवसर पर ब्लाक प्रमुख अनिल दुबे, राजेश पाल चौधरी, जगदीश शुक्ल, अमृत कुमार वर्मा, दिलीप पाण्डेय, डब्लू तिवारी, दुष्यंत सिंह, गजेन्द्र मणि त्रिपाठी, अवनीश सिंह, राजकुमार शुक्ल, सचिन सिंह, प्रदीप निषाद, रशीद अहमद, रवि तिवारी, गजेन्द्र तिवारी, सुनील कुमार छोटू, रणविजय गौतम, दिलीप भट्ट, गौरव अग्रवाल, वेद प्रकाश त्रिपाठी, दिव्यंशु दुबे, संतोष सोनी आदि मौजूद थे।

महेश शुक्ल का जनपद में प्रथम आगमन पर हुआ ऐतिहासिक स्वागत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। महेश शुक्ल द्वारा सोमवार को गौ सेवा आयोग उपाध्यक्ष (दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री) का पदभार ग्रहण करने के बाद मंगलवार को जनपद में प्रथम आगमन हुआ। इस दौरान जिले भर के जनप्रतिनिधियों, कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने गर्मजोशी के साथ उनका स्वागत किया। स्वागत का दौर जनपद की सीमा घघौवा से शुरू होकर अटल बिहारी बाजपेई प्रेक्षागृह के सभागार में जिलाध्यक्ष विवेकानंद मिश्र की अध्यक्षता में सांसद जगदंबिका पाल, विधायक श्रीराम चौहान, विधायक अजय सिंह, पूर्व सांसद अष्टभुजा शुक्ल आदि की उपस्थिति में आशीर्वाद समारोह के उपरांत संपन्न हुआ।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार दर्जा प्राप्त मंत्री बस्ती की सीमा घघौवा पर पहुंचे। जहां सैकड़ो गाड़ियों के काफिलों के साथ उनके समर्थकों का अपार जन समूह , उनके स्वागत के लिए पूरे जोश और ऊर्जा के साथ उपस्थित था। घघौवा में हरैया विधायक अजय सिंह के नेतृत्व में भव्य स्वागत किया। घघौवा के बाद खतमसराय, पटखापुर, विक्रमजोत, पचवस, छावनी, बबुरडवा, चौकड़ी, महूघाट, मुरादीपुर, हरैया, भदावल, संसारीपुर, रजौली, महराजगंज, कप्तानगंज, तिलकपुर, गोटवा, टाटा मोटर्स, फुटहिया, मूडघाट, बड़ेवन, रौता चौराहा, ब्राह्मण महासभा, रनजीत चौराहा, रोडवेज तिराहा, नगर गेट, माली टोला, गांधीनगर, हनुमानगढ़ी, स्काउट भवन, शिव मंदिर कंपनीबाग, शास्त्री चौक, पकौड़ी चौराहा सहित लगभग 50 स्थानों पर पुष्प वर्षा के साथ ही फूल मालाओं से स्वागत और अभिनंदन किया गया। महेश शुक्ल सभी का स्नेह, दुलार देखकर उन्हें सहेज कर आगे बढ़ते रहे । कार्यकर्ताओं और समर्थकों का स्नेह देखकर काफी भाव विभोर हो गए और सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। अटल बिहारी बाजपेई प्रेक्षागृह में आशीर्वाद समारोह को संबोधित करते हुए महेश शुक्ला ने गौ सेवा आयोग के उपाध्यक्ष बनाए जाने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आभार प्रकट करते हुए कहा कि जो जिम्मेदारी मिली है उसकी पूरी निष्ठा से निर्वहन करेंगे।कहा कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में हम विकसित भारत के विराट संकल्पों को सिद्ध करेंगे तथा देश और प्रदेश के विकास में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देंगे। आशीर्वाद समारोह का संचालन डॉ योगेश शुक्ल ने किया।

–मिली जिम्मेदारी का पूरी निष्ठा से करेंगे निर्वहन –महेश शुक्ल

इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष संजय चौधरी, पूर्व विधायक संजय जायसवाल, सीए चंद्रप्रकाश शुक्ल, रवि सोनकर, राजेन्द्र नाथ त्रिपाठी, प्रेम सागर तिवारी, यशकांत सिंह, पवन कसौधन, सुशील सिंह, जिलाध्यक्ष महिला मोर्चा रोली सिंह, अंकुर वर्मा, कृष्ण चंद्र सिंह, पूर्व महामंत्री राम चरन चौधरी, प्रमुख केके सिंह, योगेंद्र सिंह, जगदीश शुक्ला, जटा शंकर शुक्ल, रघुनाथ सिंह, मनमोहन तिवारी, दुष्यंत विक्रम सिंह, श्रीश पाण्डेय, जिलाध्यक्ष अल्पसंख्यक मोर्चा आलम चौधरी, जिलाध्यक्ष युवा मोर्चा अमित गुप्ता, मृगेन्द्र मणि त्रिपाठी, अभय सिंह गुड्डू, सर्वेश यादव, प्रबल मलानी, रोशन जायसवाल, राजन ठाकुर, अमरनाथ सिंह, सरोज बाबा, गिरीश पाण्डेय, रवि प्रताप सिंह, बलराम सिंह राहुल, विश्वनाथ गिरी, छोटे सिंह, राम सिंगार ओझा, पंकज चौधरी, डब्लू श्रीवास्तव, रमेश गुप्ता, हरिशंकर शुक्ल, प्रेम शंकर ओझा, चंद्रिका सिंह, बालकृष्ण ओझा, रवीश मिश्र, शिव प्रकाश सिंह, हरेंद्र यादव, विवेक कान्त पाण्डेय, वीरेंद्र शुक्ल, सुरेश गौड़, डॉ प्रमोद सिंह, सनद पटेल, दीपांशु विक्रम सिंह, भावेश पाण्डेय, टुनटुन सोनी, अचितानंद मिश्र, अशोक गुप्ता, सत्य प्रकाश सिंह, चन्द्र भूषण मिश्र सहित हजारों की संख्या में लोग मौजूद रहे।

शौर्य प्रदर्शन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के साथ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। आर्य वीर दल शौर्य प्रदर्शन व राष्ट्र रक्षा रक्षा सम्मेलन के साथ आर्य समाज नई बाजार बस्ती का 51वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि स्वामी सच्चिदानंद सरस्वती ने आर्य वीरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य वीर और वीरांगनाओं ने प्राचीनकाल से ही राष्ट्र रक्षा में अपने जीवन की आहुति दी है। वैदिक संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करके ही वशिष्ठ आश्रम में राम, संदीपनी आश्रम में श्रीकृष्ण और चाणक्य आश्रम में चन्द्रगुप्त आदि का निर्माण होता है जिन्होंने अपने ज्ञानबल से अज्ञान, क्षात्रबल से अन्याय व धनबल से अभाव को दूर किया है। उन्होने माना कि आज देश में ऐसे चरित्रवान युवाओं की आवश्यकता है जो देश धर्म के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तैयार हो।

इस अवसर पर आचार्य सुरेश जोशी ने कहा कि आर्य वीर सच्चरित्र व राष्ट्रभक्त होता है जो अपने सुकर्म से सबको अनुप्राणित करता रहता है। ओम प्रकाश आर्य प्रधान आर्य समाज नई बाजार बस्ती ने कहा आर्य वीर दल से बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास होता है। इस अवसर पर सभा में उपस्थित सबसे छोटे बच्चे वेद प्रकाश और सबसे बड़ी उम्र के राधेश्याम आर्य को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्वामी सच्चिदानंद, पण्डित योगेश दत्त आर्य, पण्डिता रुक्मिणी देवी आदि विद्वानों ने समाज में आर्य वीरों व वीरांगनाओं की उपयोगिता पर बल दिया और कहा कि वेद प्रचार के लिए इन्ही युवा शक्ति की आवश्यकता है। संचालकीय उद्बोधन में आचार्य सुरेश जोशी ने कहा कि आज देश में जितने घोटाले हुए है उन सबका मूल वैदिक संस्कृति से भटकाव ही है। यदि हम अपनी इस वैदिक संस्कृति की पहचान खोने का प्रयास करेंगे तो हम समाप्त हो जायेंगे ऐसा उद्घोष करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों की ओर लौटो का नारा देते हुए स्वदेशी का शंखनाद किया। उनके इस आवाहन पर पूरा देश एक हो गया और क्रांतिकारियों की एक लम्बी फौज तैयार हो गयी। आर्य वीर दल पूरे मनोयोग से वैदिक संस्कृति का प्रचार–प्रसार करता रहेगा। अंत में ओम प्रकाश आर्य ने कार्यक्रम में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी लोगों के प्रति हृदय से आभार प्रकट किया। इस अवसर पर आदित्य नारायण गिरि, अंकित मद्धेशिया, देवव्रत आर्य, सुमन आर्य, द्रौपदी देवी, कंचनलता आर्य, रश्मि आर्य, रजनी आर्य, वशिष्ठ गोयल, लक्ष्मी प्रसाद, दिलीप कसौधन, ओंकार आर्य, राधेश्याम आर्य, आनन्द श्रीवास्तव, विश्वनाथ, राजेन्द्र जायसवाल, रामबाबू, उपेन्द्र आर्य, राजदेव, अजीत यादी, राजकुमार, योग शिक्षक बीपी शुक्ला, प्रमोद आर्येय, रवि बरनवाल, ईश्वरचंद्र, विकास बरनवाल, नवल किशोर चौधरी, गिरजाशंकर दुबे, पिंकी आर्य, संतोष पांडे, हरिहर मुनि, देवव्रत आर्य, श्याम नारायण, राधेश्याम सिंह, शुभकरन आर्य, रंजीत, मिथिलेश, रोहित, राजकुमार, घनश्याम आर्य,प्रमोद कुमार सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"–वेंडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 9 अक्टूबर 2024 बुधवार

सम्पादकीय

हरियाणा और जम्मू- कश्मीर का जनादेश

हरियाणा और जम्मू–कश्मीर विधानसभा चुनाव के लिए वोटों की गिनती में भाजपा ने बहुमत हासिल कर लिया है। इसके साथ ही हरियाणा में भाजपा जीत की हैट्रिक लगाने को तैयार है। वहीं जम्मू कश्मीर में कांग्रेस गठबंधन ने बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया है। दोनों राज्यों के चुनाव नतीजों पर इसलिए भी नजर है क्योंकि ये नतीजे आगामी राज्यों के चुनाव पर भी असर डाल सकते हैं। हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजे पर कांग्रेस सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि नतीजे निराशाजनक हैं। सुबह तक हमें पूरी उम्मीद थी। हमारे सभी कार्यकर्ता बहुत निराश हैं क्योंकि इन्होंने पिछले 10 सालों में कांग्रेस पार्टी के लिए बहुत कुछ सहा है। लेकिन अब हमें इन सब बातों से पीछे हटते हुए एक नए सिरे से आगे सोचना होगा क्योंकि जैसे अभी चल रहा है वो ऐसे ही तो नहीं चलेगा। पार्टी को किस तरह से राज्य में सींचा नहीं गया, ताल–मेल नहीं रखा गया, कौन से लोग थे जो सबको साथ लेकर चलने के जिम्मेदार थे ये भी बाते हैं। राज्य में क्या संदेश गया है। किसलिए लोग कांग्रेस की सरकार बनाते हुए पीछे हट गए? ये सब बातें देखनी पड़ेंगी। उन्होंने कहा कि चुनाव के समय हमें लगा कि मिलकर चुनाव लड़ना चाहिए। बहुत कुछ होते हुए हमने सब बातों पर पर्दा डालते हुए चुनाव लड़ा। चुनाव तक और चुनाव के दौरान बहुत सी बातें हुईं। आज कहना अच्छा नहीं लगेगा तो इस बात को यहीं छोड़ देते हैं। पार्टी को इसको लेकर आत्मनिरीक्षण करना चाहिए।

नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता उमर अब्दुल्ला जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री होंगे, श्रीनगर में नेशनल कॉन्फ्रेंस प्रमुख फारूक अब्दुल्ला ने यह घोषणा की। जम्मू–कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस केंद्र शासित प्रदेश में विधानसभा चुनावों में जीत की ओर बढ़ रही है। फारूक अब्दुल्ला ने यह घोषणा तब की है, जब यह स्पष्ट हो गया कि कांग्रेस–एनसी गठबंधन 10 वर्षों में जम्मू–कश्मीर में पहला विधानसभा चुनाव जीतेगा। उन्होंने कहा कि 10 वर्षों के बाद लोगों ने हमें अपना जनादेश दिया है। कहा हम जनता की उम्मीदों पर खरे उतरें। यहां 'पुलिस राज' नहीं बल्कि जनता का राज होगा। हम जेल से निर्दोष लोगों को रिहा करने का प्रयास करेंगे। मीडिया स्वतंत्र रहेगा। हमें हिंदुओं और मुसलमानों के बीच विश्वास विकसित करना होगा। फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि ष्लोगों ने अपना जनादेश दिया है। उन्होंने साबित कर दिया है कि वे 5 अगस्त को लिए गए फैसले (अनुच्छेद 370 को निरस्त करना) को स्वीकार नहीं करते हैं। पूर्व मुख्यमंत्री ने यह भी उम्मीद जताई कि गठबंधन के सहयोगी जम्मू–कश्मीर का राज्य का दर्जा बहाल करने की लड़ाई में नेशनल कॉन्फ्रेंस की मदद करेंगे, जो अपने विशेष दर्जे को खत्म करने के बाद केंद्र शासित प्रदेश बन गया है।

हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद जहां बीजेपी के हौसले बुलंद हुए हैं, वहीं कांग्रेस और विपक्षी दलों के लिए यह नतीजे एक बड़ा झटका हैं। हरियाणा के चुनाव नतीजों से एक संदेश यह निकलकर गया है कि विपक्ष बीजेपी को जिन मुद्दों पर घेरने की कोशिश कर रहा था, ये मुद्दे असरदार साबित नहीं हुए। हरियाणा ही नहीं जम्मू–कश्मीर के चुनाव नतीजे भी बीजेपी के लिए अच्छे रहे हैं। पार्टी ने यहां जम्मू इलाके में ही डटकर चुनाव लड़ा था। जम्मू की 43 में से 29 सीटों पर पार्टी को जीत मिलती दिख रही है।

हरियाणा में लोकसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस ने अग्निवीर योजना, किसानों की समस्याओं, संविधान और आरक्षण खतरे में है, को मुद्दा बनाया था। तब उसे इसका फायदा मिला था लेकिन विधानसभा चुनाव के नतीजों में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे सहित विपक्ष के भी कई नेताओं ने संविधान और आरक्षण खत्म हो जाने की बात कही थी और जब चुनाव के नतीजे आए तो यह स्पष्ट रूप से दिखाई दिया था कि बीजेपी को इसका नुकसान हुआ है। कांग्रेस ने हरियाणा के चुनाव प्रचार के दौरान कहा था कि किसान बीजेपी से नाराज हैं, अग्निवीर योजना के कारण युवा बीजेपी से नाराज हैं और दलित समुदाय को इस बात का डर है कि बीजेपी संविधान और आरक्षण को खत्म कर सकती है। लेकिन हरियाणा विध्ाानसभा चुनाव के नतीजों में बीजेपी ने तमाम अनुमानों, एग्जिट पोल को उलट दिया और राज्य में लगातार तीसरी बार सरकार बनाने में कामयाबी हासिल की है। बहरहाल मतदाताओं ने भाजपा, कांग्रेसनीत गठबंधन सबको मुस्कुराने का मौका दिया है। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि विजेता जनता के सवालों पर कितना खरा उतरते हैं।

जम्मू– कश्मीर में कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस की जीत

–अभिनव आकाश–

जम्मू कश्मीर में आर्टिकल 370 के खात्मे के बाद पहली बार चुनाव हुए। चुनाव में कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस को अच्छी सफलता हासिल हुई। वहीं बीजेपी ने जम्मू रीजन में बेहतरीन प्रदर्शन किया है। नेशनल कॉन्फ्रेंस, पीडीपी, एआईपी के कैंपेन में कश्मीर को लेकर विभिन्न किस्म के वादे और दावे किए गए। जम्मू–कश्मीर में राजनीतिक परिदृश्य अब्दुल्ला और मुफ्ती के राजवंशों के ईर्द गिर्द ही घूमता रहा है। इसमें भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टियों भी प्रभाव डालने की होड़ में समय समय पर नजर आई हैं। चुनाव तीन चरण में चुनाव हुए थे और 64 प्रतिशत मतदान हुए थे। कश्मीर घाटी और जम्मू क्षेत्र की 90 सीटों में से 24 पर 18 सितंबर को पहले चरण में, 26 पर 25 सितंबर को दूसरे चरण में तथा 40 पर एक अक्टूबर को तीसरे चरण में मतदान हुआ था।

प्रधान मंत्री मोदी के लिए, जम्मू–कश्मीर चुनाव एक चुनौती और एक अवसर दोनों था। भाजपा सरकार द्वारा 2019 में अनुच्छेद 370 को निरस्त करना एक महत्वपूर्ण क्षण था जिसने राज्य की विशेष स्थिति को बदल दिया और इसे दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित कर दिया। बीजेपी अपने इस कदम का जिक्र राष्ट्रीय राजनीति में एक साहसिक निर्णय के रूप में करती है। जम्मू–कश्मीर के लोग भाजपा के विकास और सुरक्षा की बातों पर उस हद तक मुहर लगाते नजर नहीं आए या फिर कहे कि स्थानीय मुद्दे राष्ट्रीय विमर्श पर हावी हो गए। कश्मीर के परिणाम नेशनल–इंटरनेशनल स्तर पर आलोचकों को बढ़ावा दे सकता है, जो तर्क देते हैं कि इस कदम से वादे के मुताबिक जम्मू–कश्मीर के लोगों को कोई फायदा नहीं हुआ है।

कांग्रेस के लिए और विशेष रूप से राहुल गांधी के लिए चुनाव पार्टी की खोई हुई जमीन वापस पाने की क्षमता के प्रमुख संकेतक के रूप में काम करेंगे। कांग्रेस की परंपरागत रूप से जम्मू–कश्मीर में पकड़ रही है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में उसने अपनी उपस्थिति खो दी है। गांधी स्थानीय भावनाओं के साथ जुड़कर अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के खिलाफ मुखर रहे हैं। कांग्रेस के लिए एक अच्छा परिणाम राहुल गांधी को राष्ट्रीय स्तर पर अपने नेतृत्व के लिए मामला पेश करने में मदद कर सकता है। कांग्रेस के लिए, यह चुनाव सिर्फ सीटें हासिल करने के बारे में नहीं है बल्कि जम्मू–कश्मीर के राजनीतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र में प्रासंगिकता बनाए रखने के लिहाज से भी अहम थी।

अब्दुल्ला परिवार और नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) जम्मू–कश्मीर चुनाव उनके क्षेत्रीय प्रभाव का परीक्षण रहा। फारूक अब्दुल्ला और उनके बेटे उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व वाली पार्टी दशकों से जम्मू–कश्मीर की राजनीति में की प्लेयर रही है। उन्होंने अनुच्छेद 370 पर भाजपा के रुख का विरोध किया और जम्मू–कश्मीर के राज्य का दर्जा बहाल करने का आह्वान किया। एनसी का शानदार प्रदर्शन जम्मू–कश्मीर के राजनीतिक परिदृश्य में अब्दुल्ला की मौजूदगी को फिर से पुख्ता किया। फारूक अब्दुल्ला भाजपा का मुकाबला करने के लिए क्षेत्रीय दलों के बीच एक संयुक्त मोर्चा बनाने के बारे में मुखर रहे हैं और एक मजबूत गठबंधन बना। जिसका असर इस चुनाव में दिखा।

मोदी सरकार ने जम्मू कश्मीर को अलग थलग नहीं पड़ने देने का वादा किया था। सरकार बहुत पहले से कहती आ रही है कि केंद्र शासित प्रदेश में जल्द ही चुनाव होंगे। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के अनुसार सरकार ने बिना किसी किंतु परंतु के अपना वादा पूरा किया। फौरी तौर पर देखें तो जम्मू कश्मीर में सरकार नहीं बना पाई लेकिन इसे बड़े विजन के तौर पर देखा जा सकता है। खासकर, राष्ट्र के निर्माण के रूप में कश्मीर में सफलतापूर्वक चुनाव करवाना दुनिया भर को संदेश है कि भारत ने कश्मीर पर अवैध कब्जा नहीं किया हुआ है। वहां के लोगों को अपनी पसंद की सरकार चुनने का पूरा अधिकार है। अभी तक के जम्मू कश्मीर के चुनाव आतंक के साये में होते रहे हैं। दहशत के डर से बहुत से लोग वोट करने की नहीं निकलते थे। कई बार तो पूरी आबादी का 10 प्रतिशत भी वोट नहीं देखने को मिलता था। तमाम प्रतिबंधित संगठनों के ऐसे लोग जो पहले आतंकवादी कार्यवाही में लिप्त रहे हैं उन्हें भी लोकतंत्र के इस उत्सव में भाग लेने का मौका मिला।

हरियाणा में नायाब साबित हुए सैनी

तमाम विमर्श 60–65, 70–75 तक भी जा रहे थे। लेकिन तमाम अटकलों और अनुमानों से बेपरवाह एक शख्स खुद पर छह महीने पहले जताए गए भरोसे को सही साबित करने में लगा नजर आया। 8 अक्टूबर को जब नतीजे सामने आए तो सभी कोई हैरान रह गया। लेकिन बीजेपी की हरियाणा में मिली जीत कई मायने में नायाब है। अक्सर किसी भी टीम की जीत होती है तो उसका क्रेडिट वैसे तो सभी सदस्यों का जाता है, लेकिन उसके कप्तान को इसरा श्रेय थोड़ा ज्यादा दिया जाता है। वहीं हार के वक्त भी जिम्मेदारी कप्तान की ही होती है। हरियाणा के विधानसभा चुनाव में तमाम सर्वेक्षण से लेकर राजनीतिक पंडित तो कांग्रेस की जीत की कहानी लिख चुके थे। मुख्यमंत्री के चेहरे को लेकर भूपेंद्र हुड्डा, कुमारी शैलेजा और रणदीप सुरजेवाला के बीच जुबानी बयानबाजी भी शुरू हो गई थी। विश्लेषकों को लग रहा था कि हरियाणा में कांग्रेस जीत तो रही ही है, बस बीजेपी कितना नीचे जाती है और कांग्रेस अधिक से अधिक कितनी सीटें ला पाती है। तमाम विमर्श 60–65, 70–75 तक भी जा रहे थे। लेकिन तमाम अटकलों और अनुमानों से बेपरवाह एक शख्स खुद पर छह महीने पहले जताए गए भरोसे को सही साबित करने में लगा नजर आया। 8 अक्टूबर को जब नतीजे सामने आए तो सभी कोई हैरान रह गया। लेकिन बीजेपी की हरियाणा में मिली जीत कई मायने में नायाब है। राज्य में सत्ता की हैट्रिक लगाने में वो कामयाब रही। चुनाव से पहले सीएम फेस बदलने का फैक्टर एक बार फिर से हिट साबित हुआ। तीसरे दल के रूप में उभरने की और किंगमेकर बनने की आम आदमी पार्टी की उम्मीदों पर झाड़ू फिर गया।

लोकसभा चुनाव के कुछ ही महीने बाद के पहले चुनावी परीक्षण से पहले ही नायब सिंह सैनी हर परिस्थिति यानी जीत हो या हार सभी की जिम्मेदारी लेनी के लिए तैयार नजर आए। 8 अक्टूबर की सुबह वोटों की गिनती शुरू होते ही इंडिया उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जीत की जिम्मेदारी पूरी पार्टी की है। साथ ही हार की स्थिति में पूरी जिम्मेदारी लेने को लेकर भी वह स्पष्ट थे। उनका ये रुख मजबूत नेतृत्व और जिम्मेदार राजनेता की छवि को दर्शाने के लिए काफी है। नायब सिंह सैनी ने कहा कि अगर हम हारते हैं, तो जिम्मेदारी मेरी है। आखिरकार, मैं इस अभियान का फेस हूं। लेकिन मुझे अपनी जीत पर पूरा भरोसा है। हालाँकि, सैनी अन्य बीजेपी नेताओं की भांति प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व की सराहना करने से नहीं चूंके। बल्कि मोदी के नेतृत्व तुलना धर्म (धार्मिक) और अधर्म (अधर्म) के बीच की लड़ाई–कुरुक्षेत्र की लड़ाई में पार्टी का मार्गदर्शन करने से कर दी। नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में भाजपा की जीत ने कई कारकों को खारिज कर दिया जो अन्यथा उनकी सफलता में बाधा बन सकते थे।

नायब सिंह सैनी का मुख्यमंत्री

पद पर आसीन होने की टाइमिंग भी काफी दिलचस्प रही। सीएम पद से इस्तीफे के बाद मनोहर लाल खट्टर ने केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्री का पद संभाला। वहीं सैनी को मार्च 2024 में नए मुख्यमंत्री के रूप में नियुक्त किया गया। यह परिवर्तन लोकसभा चुनाव से ठीक पहले हुआ, एक ऐसा समय जो भाजपा के लिए अनिश्चितता से भरा हो सकता था। खट्टर पर्दे के पीछे रहकर सैनी का पूरा सहयोग करते नजर आए। सीएम पद को लेकर सैनी वैसे भी खट्टर की पहली पसंद थे। हरियाणा चुनाव के लिए बीजेपी उम्मीदवारों के चयन पर भी मनोहर लाल खट्टर की मुहर थी।

चुनाव से कुछ महीने पहले सीएम के रूप में कमान संभालना सैनी के लिए चौलेंजिंग था। सैनी और भाजपा कई मोर्चों पर दबाव में थी। कृषि प्रधान हरियाणा 2020–2021 के दौरान अब निरस्त कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों के विरोध प्रदर्शन का गवाह रहा था। उस दौर में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार और खट्टर के नेतृत्व वाली राज्य सरकार दोनों के खिलाफ बड़े पैमाने पर प्रदर्शन हुए थे। भाजपा को जवान और किसान दोनों मतदाताओं के गुस्से का सामना करना पड़ रहा था। अग्निपथ योजना को लेकर रक्षा और अर्धसैनिक बलों की नाराजगी भी नजर आ रही थी। एग्जिट पोल में कांग्रेस की जीत की भविष्यवाणी के बावजूद, सैनी पूरे अभियान के दौरान आश्वस्त रहे कि भाजपा हरियाणा में लगातार तीसरी बार सरकार बनाएगी। जमीन पर उनका नेतृत्व, पार्टी अभियानों में प्रमुख भूमिका और पार्टी के मजबूत संगठनात्मक ढांचे को सैनी की अपनी सीट लाडवा सहित कई प्रमुख निर्वाचन क्षेत्रों में भाजपा को आगे रहने में मदद करने का श्रेय दिया जाता है।

सैनी द्वारा पर्याप्त जनसमर्थन हासिल करने में सफल रहने का एक प्रमुख कारण अपने 210 दिनों के छोटे कार्यकाल के दौरान विकास कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करना था। सैनी ने लोगों के जीवन में सुधार लाने के उद्देश्य से कई पहल लागू कीं। उन्होंने ग्राम पंचायतों के लिए व्यय सीमा 5 लाख रुपये से बढ़ाकर 21 लाख रुपये कर दी, जिससे ये स्थानीय निकाय अधिक विकासात्मक परियोजनाएं शुरू करने में सक्षम हो गए। बीजेपी ने सत्ता विरोधी लहरे को संभालने में बड़ी कामयाबी हासिल की और यही वजह है कि पार्टी राज्य में बड़ी जीत हासिल की है। इनके अलावा, खर्ची और पर्ची के आरोपों ने भी बीजेपी की चुनाव जीतने में मदद की। कांग्रेस के सत्ता में लौटने पर वसूली का रैकेट फिर से शुरू होने के डर के सहारे पार्टी ने प्रभावी रूप से जनता को अपने पक्ष में किया।

हरियाणा में इस बार युवा, दलित, किसान जैसे मुद्दे हावी रहे। एग्जिट पोल्स से लेकर शुरुआती 100 मिनटों के रुझानों तक कांग्रेस यहां दौड़ में आगे दिख रही थी, लेकिन बाद में समीकरण बदल गए और रुझानों में भाजपा बहुमत के आंकड़े को पार कर गई।

हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजों ने इस बार चौंका दिया। कांग्रेस इस बार जीत को लेकर आश्वस्त थी। एग्जिट पोल्स से लेकर सियासी बयानों तक यही संकेत मिल रहे थे कि भाजपा इस बार मुकाबले में कमजोर है। कांग्रेस में यह मंथन भी होने लगा था कि 65 से ज्यादा सीटें आती हैं तो कमान किसे सौंपी जाएगी। भूपेंद्र सिंह हुड्डा, कुमारी सैलजा और रणदीप सुरजेवाला, तीनों नेता सीएम पद पर अपनी दावेदारी को लेकर ताल ठोंक रहे थे। युवाओं में बेराजगारी और किसानों–पहलवानों की नाराजगी जैसे मुद्दे को कांग्रेस जोरशोर से उठा रही थी। इन सबके बावजूद भाजपा कांग्रेस की बगल से जीत को निकालकर ले गई। यह कुछ ऐसा ही है, जैसे कुश्ती में ष्बगलडूबष दांव होता है, जब एक पहलवान सामने वाले पहलवान की बगल और पकड़ से बाहर निकलकर उसे परास्त कर देता है।

हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को हार मिली है। मतदान के बाद आए एग्जिट पोल से गदगद कांग्रेस को मतगणना के दिन करारा झटका लगा। पार्टी को पूरी उम्मीद थी कि इस बार सत्ता में उलटफेर होगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ। चुनावी विश्लेषक भी हैरान हैं कि आखिर ऐसा क्यों हुआ। कांग्रेस की हार में ये फैक्टर मुखर रहे। हरियाणा में कांग्रेस प्रचार में काफी पिछड़ी। भाजपा जहां चुनावों की घोषणा से पहले ही चुनावी मूड में आ गई थी वहीं कांग्रेस नेता लिस्टों के लिए दिल्ली के ही चक्कर लगाते रहे। पार्टी का शीर्ष नेतृत्व भी प्रचार में काफी देर से उतरा।

कांग्रेस में गुटबाजी हावी रही। पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा और सांसद कुमारी सैलजा के बीच तनातनी जगजाहिर है। सैलजा खुद को सीएम पद का प्रबल दावेदार बता चुकी हैं। वहीं चुनाव के दौरान कुमारी सैलजा के बारे में तथाकथित भूपेंद्र हुड्डा समर्थक की अभद्र टिप्पणी से बड़ा बवाल मचा। खुद सैलजा ने प्रचार से दूरी बना ली। बाद में राहुल गांधी उन्हें मंच पर लाए और हुड्डा से हाथ मिलवाया। हालांकि अब भी दोनों एक साथ नहीं आए।

असंध के कांग्रेस उम्मीदवार शमशेर गोगी ने कहा था कि कांग्रेस जीतती है तो पहले अपना घर भरेंगे। इसका वीडियो वायरल होने के बाद भाजपा ने इस मुद्दे को भ्रष्टाचार से जोड़ा और कांग्रेस पर आक्रामक रुख अख्तियार कर लिया। कांग्रेस ने डैमेज कंट्रोल का प्रयास किया लेकिन तब तक नुकसान हो चुका था।

किसान, पहलवान और जवान का मुद्दा भी कांग्रेस भुनाने में कामयाब नहीं रही। इनके अलावा, कांग्रेस के खिलाफ भाजपा ने पर्ची खर्ची का मुद्दा बनाया और इसको जमकर भुनाया भी। कांग्रेस पर्ची खर्ची की काट नहीं कर पाई, बल्कि कांग्रेस के प्रत्याशियों ने खुले तौर पर यह बयान दिए कि कोटे से नौकरियां मिलेंगी, इसका प्रदेशभर में गलत संदेश गया और भाजपा ने इसी मुद्दे को भुनाया। कांग्रेस मैरिट मिशन को लेकर कोई ठोस रणनीति नहीं बना पाई। दूसरा, राहुल गांधी ने लोकसभा चुनावों की तर्ज पर ही संविधान के मुद्दे को भुनाने की कोशिश की, लेकिन लोगों में यह फार्मूला इस बार नहीं चला।

टिकट वितरण से लेकर तमाम मामलों को लेकर हाईकमान की तरफ से पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह को फ्री हैंड करने का फार्मूला भी उल्टा पड़ा। सांसद कुमारी सैलजा और रणदीप सुरजेवाला खुलकर इसे जाहिर भी किया। सैलजा ने कुछ ही सीटों पर प्रचार किया। पहले से ही खेमों में बंटी कांग्रेस को इसका नुकसान हुआ है। –प्रस्तुति– विजय

फास्ट फूड के खतरे

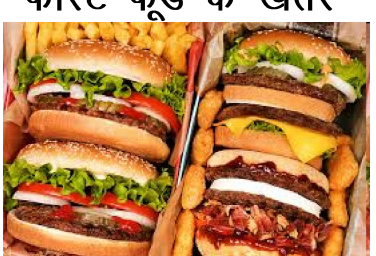

–सरस्वती रमेश–

सिमरन के दोनों बच्चे टीनएजर हैं जो चिप्स, चॉकलेट, कोल्डड्रिंक, आइसक्रीम, पिज्जा और पैकेज्ड फूड के दीवाने हैं। यह ऐसी उम्र है जब बच्चों को डांटना–फटकारना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। बच्चे मनमर्जी का खाना–पीना चाहते हैं। घर पर बना अधिकतर खाना उन्हें पसंद नहीं आता। सिमरन सजग मां है। उसे पता है कि डिब्बाबंद और पैकेज्ड फूड अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड्स की कैटेगरी में आते हैं जो सेहत के लिए हानिकारक होते हैं। वह बच्चों को ज्यादा पैकेट बंद चीजें खाने से मना भी करती है। मगर वो मानते नहीं। अब सिमरन उनके बढ़ते वजन व स्वास्थ्य को लेकर चिंतित रहती है। यह चिंता आज सिमरन जैसी हजारों–लाखों महिलाओं की है जो अपने बच्चों के स्वस्थ भविष्य के प्रति आशंकित हैं।

अनेक कामकाजी महिलाएं और पुरुष भी अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड्स के चंगुल फंसे हुए हैं। थकान भरी दिनचर्या, समय का अभाव, स्वादिष्ट भोजन की चाह और परिवेश के कारण वो झटपट उपलब्ध खाने को प्राथमिकता देने लगे हैं। सिर्फ महानगरों में ही बच्चों, महिलाओं और पुरुषों के बीच अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड की खपत नहीं बढ़ी बल्कि छोटे शहरों, कस्बों यहां तक कि गांवों में भी पैकेट बंद खाद्य वस्तुएं खूब बिक रही हैं। इनका बाजार तेजी से बढ़ रहा है। बच्चों को उपहार में कुकीज, चॉकलेट दिया जाता है। उनको बहलाने के लिए चिप्स, सॉफ्टड्रिंक, जूस आदि घर पर रखा जाता है। बच्चे ताजे के बजाय पैकेटबंद जूस पीना ज्यादा पसंद करते हैं। सॉस और कैचअप तो सभी के फ्रिज में रखा होता है। साल 2023 में भारत में पैकेज्ड फूड मार्केट का मूल्य 2.8 बिलियन डॉलर रहा, 2026 तक इसके पांच ट्रिलियन रुपये से अधिक होने की उम्मीद है।

अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड्स में नमक, चीनी और फैट के अलावा आर्टिफिशियल कलर, फ्लेवर, प्रिजर्वेटिव, आर्टिफिशियल स्वीटनर, थिकनर, इमल्सिफायर वगैरह डाले जाते हैं। जो निगेटिव न्यूट्रिएंट माने जाते हैं। ऐसा फूड्स को लंबे समय तक सुरक्षित रखने, टेक्स्चर बेहतर बनाने और स्वाद को लजीज बनाने के लिए करते हैं। ब्रिटिश हार्ट फाउंडेशन ने अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड्स की कैटेगरी में ऐसे फूड्स आइटम को रखा है, जो लंबे समय तक इस्तेमाल किए जा सकते हैं और इनमें पांच या उससे ज्यादा इंग्रेडिएंट होते हैं।

अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड का सेवन सबसे ज्यादा बच्चे और युवा करते हैं। आज की जनरेशन को सबकुछ जल्दी चाहिए, भूख मिटाने का तरीका भी फास्ट चाहिए। तभी दो मिनट में बनने वाला नूडल्स अकेले रहने वाले लड़के–लड़कियों के बीच इतना लोकप्रिय है। रसोई में जाकर कुछ हेल्दी और टेस्टी पकाने का धैर्य अब खत्म होता जा रहा है। युवा खाना पकाने के बजाय अपना वक्त प्रोडक्टिव लगने वाले कामों में लगाना चाहते हैं। फिर पैकेट में मिलने वाले खाद्य पदार्थ स्वादिष्ट और फौरन भूख मिटाने वाले होते हैं। मतलब इनकी कम मात्रा का सेवन करके भी भूख मिट जाती है। अमूमन हर कोई किसी न किसी रूप में अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड खा रहा है। फिर चाहे वह बिस्किट हो या फ्रूट जूस।

अनेक शोधों से यह जाहिर हो चुका है कि अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड्स से मोटापा, डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर और हार्ट की बीमारियां होने की संभावना बढ़ जाती है। अब डिप्रेशन भी सूची में जोड़ दिया गया है। जर्नल ऑफ द अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन में प्रकाशित शोध के मुताबिक जो महिलाएं अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड ज्यादा खाती हैं, खासकर आर्टिफिशियल स्वीटनर्स वाले, उन्हें डिप्रेशन होने का खतरा अन्य महिलाओं से ज्यादा होता है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में गैर–संचारी रोगों के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं जिसकी मुख्य वजह लाइफस्टाइल और खान–पान है, यह भी कि भारत में 56 प्रतिशत बीमारियों की वजह अनहेल्दी फूड है।

शोधकर्ता मानते हैं कि अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड स्मोकिंग जितना एडिक्टिव होते हैं। इन्हें इस तरह बनाया जाता है कि बार–बार खाने की इच्छा हो। शुरू में शौकिया तौर पर इसे खाते हैं, मगर जल्द ही तलब सी उठने लगती है। इन खाद्य पदार्थों में रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट और वसा की मात्रा ज्यादा होती है, जो हमारे दिमाग में बदलाव कर सकते हैं। अधिकतर मांएं चाहती हैं कि उनके बच्चों को अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड के एडिक्शन से निजात मिले। अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड के उत्पादन और उपभोग पर कई देश लगाम लगाने के उपाय अपना रहे हैं जिनमें चिली, मैक्सिको, डेनमार्क, हंगरी, फ्रांस फिनलैंड व नॉर्वे शामिल हैं।

भारत में, जीएसटी दरों का भोजन में पोषण सामग्री या अत्यधिक शुगर से कोई लेना–देना नहीं है।

नायक नहीं खलनायक है, कांग्रेस का सत्यानाश कर दिया, विनेश फोगाट पर बरसे बृजभूषण शरण सिंह

संवाददाता–गोण्डा। भाजपा के पूर्व सांसद और बाहुबली बृजभूषण शरण सिंह ने महिला पहलवान विनेश फोगाट पर एक बार फिर हमला किया है। बृजभूषण शरण सिंह ने हरियाणा की जुलाना सीट विनेश की जीत को भी बेइमानी करार दिया। बृजभूषण सिंह ने बिना विनेश फोगाट का नाम लिए कहा कि जीतने वाले नायक नहीं पहलवान खलनायक हैं। वह तो जीत ही जाएंगी, वह बेइमानी करके ही जीतती रही हैं। यहां भी ऐसे ही जीतने की कोशिश करती हैं। वह तो जीत गई, लेकिन कांग्रेस का सत्यानाश हो गया। हम तो हरियाणा की जनता को बहुत धन्यवाद देते हैं। जिस तरह से किसान और पहलवान आंदोलन के नाम पर लोगों को भ्रमित करने की कोशिश की गई, उससे साफ हो गया कि ये नायक नहीं खलनायक नहीं हैं।

विनेश फोगाट समेत कई महिला पहलवानों ने बृजभूषण शरण सिंह पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था। उनके खिलाफ कार्रवाई और एफआईआर के लिए लंबे समय तक दिल्ली में पहलवानों का आंदोलन भी चला था। उस समय बृजभूषण शरण सिंह भारतीय पहलवान संघ के अध्यक्ष भी थे। बृजभूषण ने कहा कि मेरा नाम लेकर वह जीत गई तो अच्छी बात है। कम से कम मेरे नाम में इतना दम तो है कि कोई उसके नाम पर जीत रहा है। लेकिन कांग्रेस का क्या हुआ। उसका का सत्यनाश हो गया। वह जहां भी कदम रखती हैं उसका सत्यानाश हो जाता है। वह कांग्रेस में गई और कांग्रेस का सत्यानाश हो गया। अब कांग्रेस का बंटाधार हो जाएगा। अब राहुल गांधी क्या करेंगे। प्रियंका गांधी क्या कहेंगी।

गौरतलब है कि एग्जिट पोल और कई ओपिनियन पोल में हरियाणा में कांग्रेस की सरकार बनने की संभावना जताई गई थी। शाम पांच बजे तक आए रुझानों के अनुसार भाजपा आसानी से यहां तीसरी बार सरकार बनाने जा रही है। इससे पहले विनेश के कांग्रेस में शामिल होने और चुनाव लड़ने की घोषणा पर भी बृजभूषण सिंह ने कहा था कि पहलवानों का आंदोलन राजनीति से प्रेरित था। विनेश के कांग्रेस में शामिल होने और चुनाव लड़ने के ऐलान ने सबकुछ साफ कर दिया है। पूरे आंदोलन के पीछे कांग्रेस ही थी।

बैंक का नेटवर्क टावर गिरने से महिला की मौत, बाल-बाल बचा पति

संवाददाता–बलरामपुर। स्थानीय कोतवाली क्षेत्र के बालापुर बाजार स्थित प्रथमा यूपी ग्रामीण बैंक से पैसा निकालकर पति के साथ घर लौट रही महिला पर बैंक का नेटवर्क टॉवर गिर गया। टॉवर गिरने से महिला की मौत हो गई। बाइक चला रहा पति बाल–बाल बच गया। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई है।

गैसड़ी थाना क्षेत्र के देवीसाईंडीह भोलाडीह निवासी जुम्मन अपनी पत्नी राबिया (50) के साथ मंगलवार की दोपहर बालापुर बाजार स्थित प्रथमा यूपी ग्रामीण बैंक में पैसा निकालने गया था। जुम्मन ने बताया कि पैसा निकालकर वह अपनी पत्नी के साथ बाइक से घर के लिए चला ही था कि बैंक का नेटवर्क टॉवर अचानक उसकी पत्नी के सिर पर गिर गया।

नेटवर्क टॉवर गिरने से राबिया की मौके पर ही मौत हो गई। घटना में जुम्मन बाल–बाल बच गया। एसओ जरवा अखिलेश पांडेय ने बताया कि शव का पंचनामा कराकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। मामले की छानबीन की जा रही है।

डिप्टी रेंजर की गाड़ी ने चार को रौंदा, एक मासूम समेत दो की मौत, दो बच्चे घायल

संवाददाता–गोण्डा। खरगुपुर थाना क्षेत्र के आर्यनगर महाराजगंज मार्ग पर गोपाल बाग में एक कार चालक आर्यनगर से महाराजगंज की तरफ जा रहा था। बलरामपुर महाराजगंज मार्ग पर गोपाल बाग के पास पहुंचा ही था कि शौच से वापस लौट रहा एक व्यक्ति को ठोकर मारते हुए अनियंत्रित होकर उसके दरवाजे पर रखा कल्टीवेटर से टकराते हुए कस्बा के ही दो लड़कियां सम्मय माता मंदिर से पूजा कर घर वापस जा रही थी। पीछे से दोनों लड़कियों व एक साइकिल सवार को टक्कर मार दी। जिससे सभी लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। आसपास के लोगों ने इसकी सूचना पुलिस व परिजनों को देते हुए घायलों को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय ले गए। जहां पर तैनात चिकित्सकों ने अंगद लाल विश्वकर्मा उर्फ झुरई लोहार पुत्र राम शब्द उम्र 35 वर्ष गोपाल बाग के रहने वाले तथा शगुन पुत्री पुनीत श्रीवास्तव उम्र 10 वर्ष रुपईडीह गोपाल बाग को मृत घोषित कर दिया। तथा घायल परी पुत्री पुनीत श्रीवास्तव उम्र 14 वर्ष निवासी रुपईडीह गोपाल बाग और रौनक पुत्र लव कुश मिश्रा उम्र 12 वर्ष तिवारी पुरवा कमडावा का जिला अस्पताल में इलाज चल रहा है।

इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक थाना खरगुपुर कमलाकांत त्रिपाठी ने बताया कि मार्ग दुर्घटना में घायलों को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय ले गए। तथा वाहन को कब्जे में ले लिया गया है। अभी तक किसी भी पक्ष से कोई तहरीर नहीं मिली है। तहरीर मिलते ही मामले की प्राथमिकी दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

अपर पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार रावत ने बताया कि 8 अक्टूबर की सुबह एक अनियंत्रित कार बहराइच आर्य नगर बलरामपुर मार्ग पर गोपाल बाग के पास अनियंत्रित होकर एक कल्टीवेटर से टकरा गई। जिसमें चार लोग घायल हो गए हैं। घायलों को उपचार के लिए जिला अस्पताल भेजा गया जहां पर डॉक्टरों ने दो लोगों को मृत्यु घोषित कर दिया है। जबकि दो लोगों का इलाज चल रहा है। गाड़ी को कब्जे में लेकर अग्रिम वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

मां के साथ सो रही बच्ची को भेड़िये ने जबड़े में दबोचा, किया घायल

संवाददाता–बहराइच। थाना क्षेत्र हरदी अन्तर्गत ग्राम पंचायत गरेरी गुरुदत्त सिंह का मजरा लोधान पुरवा निवासी अंजू (07) पुत्री रामपाल को सोमवार की रात करीब साढ़े ग्यारह बजे के आसपास अपनी मां सुषमा देवी के साथ में अपने घर के अंदर आंगन में लेटी हुई सो रही थी कि अचानक घर के पास मे लगे गन्ना के खेतों से निकले भेड़िये ने दरवाजे पर ठोकर मारकर घर के आंगन मे पहुंच गया। दरवाजे में जंजीर नहीं लगी है। लाठी लगा कर बंद कर देते थे जिससे भेड़िये के ठोकर मारने से दरवाजा खुल गया और भेड़िये ने अंजू को अपने जबड़े मे दबोच लिया और आंगन से खींचने लगा। अंजू रोने लगी तब मां की आंख खुल गई और जोर जोर से आवाज लगाई तब गांव के लोगों ने दौड़ कर हांका लगाया। भेड़िया बच्चे को छोड़कर गन्ना के खेतों मे चला गया। आनन–फानन मे परिजनों ने एम्बुलेंस सेवा से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र महसी पहुंचाया जहां पर प्राथमिक उपचार करने के बाद डाक्टर ने मेडिकल कॉलेज बहराइच रेफर कर दिया जहां पर उसका इलाज चल रहा है।

नीलगाय से टकराकर गिरा बाइक सवार, चार पहिया की ठोकर से मौत

संवाददाता–महराजगंज। थानी–फरेंदा राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित सिकन्दरा जीतपुर पेट्रोल पंप के पास मंगलवार को एक बड़ा हादसा हो गया। नीलगाय से टकराकर सड़क पर गिरे बाइक सवार युवक को पीछे से आए तेज रफ्तार चार पहिया वाहन ने ठोकर मार दी। इस हादसे में गंभीर रूप से घायल युवक को जिला अस्पताल ले जाया जा रहा था, लेकिन रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। संत कबीरनगर के बखिरा निवासी मेराज पुत्र हसन (40) बाइक से कहीं जरूरी काम से जा रहा था। सिकन्दरा जीतपुर स्थित पेट्रोल पंप के पास अचानक उसकी बाइक के आगे नीलगाय आ गई। वह संभल नहीं पाया और नीलगाय से टकरा गया। इस घटना में बाइक से अनियंत्रित होकर वह सड़क पर गिरकर घिसटने लगा। अभी वह संभल पाता कि इसी बीच पीछे से कोई चार पहिया वाहन तेज रफ्तार आया और मेराज को जोरदार ठोकर मार दिया। इस हादसे में बुरी तरह घायल होकर मेराज सड़क पर तड़पने लगा।

चारपाई पर लादकर महिला को दौड़ते हुए पुलिसकर्मियों ने पहुंचाया अस्पताल, नहीं बची जान

संवाददाता–महराजगंज। नौतनवा कस्बे के विष्णुपुरी मोहल्ले की एक महिला ने मंगलवार को दिन में अपने घर के कमरे का दरवाजा बंद कर आग लगा लिया। चीख–पुकार की आवाज सुनकर पहुंचे पड़ोसियों ने पुलिस को सूचित किया। पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और महिला को कमरे से निकालकर चारपाई पर कंधे पर लादकर खुद दौड़ते हुए सड़क पर खड़े पुलिस वाहन तक पहुंचाया। अस्पताल में भर्ती कराया, लेकिन इलाज के दौरान उसकी मृत्यु हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले की जांच की जा रही है। मृतका कुसुम का मंगलवार की सुबह उसकी सास और ननद से किसी बात को लेकर कहासुनी हुई थी। मामला शांत हुआ तो कुसुम का पति किशोर अपने काम पर चला गया और उसके दोनों बच्चे स्कूल चले गए। महिला की सास भी अपने काम पर चली गई। लोगों के अनुसार महिला पारिवारिक विवाद से इस तरह आजिज आ चुकी थी कि उसने आत्महत्या करने की ठान ली। जैसे ही घर पूरी तरह खाली हुआ कुसुम ने कमरे का दरवाजा बंद कर आग लगा लिया। पड़ोसियों की सूचना पर पहुंची पुलिस कमरे का बंद दरवाजा तोड़ती उससे पहले कुसुम ने दरवाजा खोल दिया।

पुलिस ने आनन–फानन में महिला को अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया, लेकिन उसकी जान नहीं बच सकी। पुलिस को महिला का लिखा एक पत्र भी मिला है। इसमें उसने सास, ननद व ननद के पति से विवाद होने का आरोप लगाया है। अपने पति व बच्चों के बारे में कुछ नहीं लिखा है। घर में ही आग लगाकर बुरी तरह झुलसी कुसुम की जिला अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो जाने के बाद घटनास्थल पर फोरेंसिक टीम ने भी पहुंचकर साक्ष्य को एकत्रित किया। फोरेंसिक टीम के प्रभारी रितिक के साथ पहुंचे टीम के सदस्यों ने घटनास्थल की बारीकी से जांच पड़ताल की। मौके से कई साक्ष्य भी एकत्रित किए। महिला के आग लगाने की सूचना पर प्रभारी निरीक्षक धर्मेंद्र कुमार सिंह पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे गए। गंभीर रूप से झुलसी महिला को चारपाई पर लादकर दौड़ते हुए सड़क तक पुलिस वाहन तक पहुंचाया। पुलिस की संवेदना की लोग खूब तारीफ कर रहे हैं। महिला का घर संकरी गली में होने के कारण पुलिस पैदल वहां पहुंची थी और कोई साधन न देख खुद पुलिस कर्मियों ने महिला को कंधे पर चारपाई पर लादकर सड़क तक पहुंचाया। पुलिस ने पीएचसी में प्राथमिक इलाज कराकर जिला अस्पताल तक पहुंचाया। आतिश कुमार सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक ने कहा कि महिला के आग लगाने की सूचना पर पुलिस पहुंची और तत्काल उसे अस्पताल पहुंचाया गया। महिला की मौत हो गई। उसके पास से एक पत्र मिला है, जिसमें उसने अपनी ननद, उसके पति और सास से विवाद होने की बात लिखी है। महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस मामले की सघन जांच कर रही है।

मोहम्मद साहब के प्रति टिप्पणी के विरोध में निकाला जुलूस, प्रदर्शन

संवाददाता–महराजगंज। महंत यति नरसिंहानंद की मोहम्मद साहब के खिलाफ टिप्पणी को लेकर मुस्लिम समुदाय ने प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि यह टिप्पणी सोशल मीडिया पर वायरल हुई है और समाज के लोग आहत हैं।. महंत यति नरसिंहानंद द्वारा कुछ दिन पहले मोहम्मद साहब के प्रति की गई टिप्पणी से नाराज मुस्लिम समुदाय के लोगों ने मंगलवार को निचलौल में प्रदर्शन किया। जाहिद अली के नेतृत्व में निचलौल के चिउटहां रोड स्थित किसान डिग्री कालेज के मैदान में प्रदर्शन कर रहे लोगों का कहना रहा कि टिप्पणी को सोशल मीडिया पर वायरल किया गया था। इससे समाज के लोग आहत हैं और इस इस मामले में कार्रवाई होनी चाहिए। बाद में एसपी को संबोधित ज्ञापन सीओ अनुज कुमार सिंह को सौंपा गया। विरोध प्रदर्शन में शामिल आबिद अली, शहाबुद्दीन, अदील, रज्जाक, हारून, मुसाहेब, तनवीर, खुरशेद मलिक, सत्तार और गयासुद्दीन आदि ने कहा कि गाजियाबाद के एक मंदिर के महंत यति नरसिंहानंद ने मोहम्मद साहब के प्रति आपत्तिजनक बयान देते हुए समुदाय के लोगों को आहत किया है।

कहा गया कि इस प्रकार का बयान कई बार सार्वजनिक मंच से दिया गया है और सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इन लोगों ने कहा कि इस तरह के विवादित बयान को लेकर शासन–प्रशासन द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गई है। इनकी मांग है कि ऐसे बयान देने वाले के खिलाफ कार्रवाई की जाय, नहीं तो मुस्लिम समुदाय के लोग सड़क पर उतरेंगे और धरना–प्रदर्शन करेंगे।

श्री हनुमत संस्कृत विद्यालय में गुफा में विराजमान हैं मां दुर्गा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या।जय मां वैष्णो दुर्गा पूजा समिति हनुमत संस्कृत विद्यालय हनुमानगढ़ी चौराहा 25 वर्षों से बलराम गुप्ता के संयोजन में मां दुर्गा की भव्य प्रतिमा और दिव्या झांकी को दिखाते आ रहे हैं इस वर्ष मां वैष्णो देवी की गुफा की दिव्या झांकी सजा करके शारदीय नवरात्र में आने वाले श्रद्धालुओं को मंत्र मुग्ध कर रहा है। वहीं पंडाल में जैसे आप प्रवेश करेंगे सबसे पहले बाबा बर्फानी का दर्शन होगा उसके बाद गुफा के द्वारा मां दुर्गा के मनमोहक प्रतिमा का दर्शन होगा इसको देख मन आनंदित हो जा रहा है। हनुमानगढ़ी के महंत प्रभु दास उर्फ मामा दास ने बताया कि श्री हनुमत संस्कृत महाविद्यालय में प्रत्येक वर्ष जय मां वैष्णो दुर्गा पूजा समिति द्वारा भव्य प्रतिमा प्रतिष्ठित की जाती है इस वर्ष भी भव्य प्रतिमा गुफा में विराजमान है, जिनका दर्शन कर मन हर्षित हो जाता है।

हनुमानगढ़ी संत सूर्यभान दास महाराज ने बताया कि नवरात्र मां दुर्गा के उपासना का पर्व है और शारदीय नवरात्र में मां की दिव्या झांकी सजाई जाती है जिसका दर्शन कर मन हर्षित हो जाता है आज हनुमानगढ़ी हनुमत संस्कृत विद्यालय में मां का दर्शन कर मन प्रसन्न हो गया पिछले 25 वर्षों से बलराम गुप्ता के संयोजन मां की झांकी सजाई जा रही है जिसकी अलौकिक छटा मंत्र मुक्त कर देती है। समिति के संयोजक बलराम गुप्ता ने बताया कि पिछले 25 वर्षों से मन की कृपा से मां की झांकी सजाई जा रही है इसमें मेरा कोई योगदान नहीं है सब मां की कृपा से संपन्न होता है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष की झांकी मां वैष्णो की गुफा के रूप में बनाई गई है जिसमें एक तरफ से प्रवेश है और दूसरी तरफ से निकास, पंडाल में प्रवेश करते ही सबसे पहले बाबा बर्फानी का दर्शन होगा और उसके उपरांत मां की कृपा प्राप्त होगी। उन्होंने बताया कि विसर्जन के पहले जागरण होगा और तेराह अक्टूबर को मां के प्रतिमा का विसर्जन किया जाएगा।महंत आचार्य कौशल ने बताया अयोध्या में कई स्थानों पर मां की प्रतिमा प्रतिष्ठित की जाती है, हनुमत संस्कृत विद्यालय में वर्षों प्रतिमा स्थापित की जा रही है और आगे भी हम लोग मां के आशीर्वाद से प्रतिमा स्थापित करते रहेंगे।

हर साल 15 सौ युवाओं को मिलेगा स्वरोजगार

संवाददाता–गोंडा। जिले में युवाओं के लिए प्रदेश सरकार की मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान योजना से जिले के 1500 युवाओं को स्वरोजगार के मौके मिल सकेंगे। इसके लिए बीते मंगलवार को शासनादेश जारी किया गया है।

उपायुक्त उद्योग बाबूराम ने बताया कि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम वर्ग के उद्यमियों को गति प्रदान करने के लिए स्वरोजगार के लिए प्रयासरत युवाओं को योजना के तहत हर वर्ष जिले के 1500 युवाओं को बिना गारंटी पांच लाख रुपये का लोन मिलेगा। इसमें सरकार ने मार्जिन मनी में छूट देने की बात कही है। ऋण हासिल करने के बाद छह माह तक किस्त का भुगतान न करने की सुविधा भी होगी। योजना का लक्ष्य युवाओं को वित्त पोषित कर स्वरोजगार मिशन के तहत 10 वर्षों में जिलास्तर पर सूक्ष्म इकाइयों की स्थापना कराना है।

योजना के तहत आवेदन के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता कक्षा आठ निर्धारित की गई है। इंटर पास आवेदकों को प्राथमिकता मिलेगी। पांच लाख के ऋण का चार वर्षों में सफल भुगतान करने वाले युवाओं को 10 लाख रुपये का ऋण उपलब्ध कराया जाएगा, जिस पर ब्याज में उन्हें 50 प्रतिशत की छूट मिलेगी। जो बेरोजगार युवाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर प्रदान पर वरदान साबित होगी। इसमें कई तरह के फायदे मिलेंगे। उन्होंने बताया कि इसके लिए 21 से 40 उम्र के साथ कम से कम आठवीं उत्तीर्ण और उत्तर प्रदेश का निवासी होना निर्धारित किया गया है। योजना से जुड़ी जानकारी के लिए कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं।

योग योगेश्वर श्रीकृष्ण ने इंद्र के अहम को चूर चूर कर दिया -जगतगुरु डा. राघवाचार्य

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। श्रीमती बिंदु त्रिपाठी के प्रथम पुण्यतिथि उनके पुण्य स्मृति में नया घाट स्थित श्री राम कथा पार्क में मूर्धन्य पंडित उमापति त्रिपाठी महाराज के आशीर्वाद से तीन कलश तिवारी मंदिर धर्मार्थ सेवा ट्रस्ट अयोध्या के सौजन्य से सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा छठवें दिवस की बेला में जगतगुरु रामानुजाचार्य डॉ स्वामी राघवाचार्य महाराज ने गोवर्धन लीला के साथ भगवान श्रीकृष्ण की बाललीलाओं का प्रसंग सुनाया। राजकुमार नंदवाना ने बताया कि इस दौरान भगवान के जन्मोत्सव, उनके नामकरण और पूतना वध के साथ गायनचोरी की लीलाओं का वर्णन सुनकर श्रद्धालु मंत्रमुग्ध हो गए। महाराज ने बताया कि भगवान ने अपनी लीलाओं से जहां कंस के भेजे विभिन्न राक्षसों का संहार किया, वहीं ब्रज के लोगों को आनंद प्रदान किया।

जगतगुरु महाराज ने कहा कि इंद्र को अपनी सत्ता और शक्ति पर अहम हो गया था। उसका गर्व दूर करने के लिए भगवान ने ब्रज मंडल में इंद्र की पूजा बंद कर गोवर्धन की पूजा शुरू करा दी। इससे गुस्साए इंद्र ने ब्रजमंडल पर भारी बरसात कराई। प्रलय से लोगों को बचाने के लिए भगवान ने कनिष्ठा उंगली पर गोवर्धन पर्वत को उठा लिया। सात दिनों के बाद इंद्र को अपनी भूल का एहसास हुआ। महाराज जी ने कहा कि योग योगेश्वर भगवान श्री कृष्णा की माया के बस में इस पृथ्वी पर रह रहे चराचर जीव है और भगवान घमंड का संघार करते हैं इंद्र के अहम को उन्होंने चूर–चूर कर दिया और भक्तों की भक्ति की रक्षा की।

कथा शुभारंभ के पहले पंडित शिवेश्वरपति त्रिपाठी, पंडित श्रीशपति त्रिपाठी और महापौर महंत गिरीशपति त्रिपाठी व्यास पीठ और व्यास पीठ पर विराजमान जगतगुरू स्वामी डॉ राघवाचार्य महाराज का पूजन अर्चन किया। कथा के विश्राम मेला पुनः आरती उतारी के और प्रसाद वितरण किया गया। आज की कथा में सैकड़ो की संख्या में कथा प्रेमी उपस्थित रहे। सभी अतिथियों का स्वागत रूद्रेश त्रिपाठी ने किया। पांचवें दिवस की कथा में अयोध्या प्रभारी मंत्री सूर्यप्रताप शाही सहित सैकड़ो लोग मौजूद रहे।

दुर्गा प्रतिमा पर पथराव की हिंसा में 33 आरोपी गिरफ्तार, लूट का सामान भी जब्त

संवाददाता–कुशीनगर। पडरौना शहर के छावनी में भिसवा लाला (गनेशीपट्टी) गांव में जा रही मां दुर्गा की प्रतिमा पर पथराव और युवकों की पिटाई किए जाने के मामले में सोमवार को पूरी रात पुलिस ने सर्च ऑपरेशन चलाया। इस दौरान चार महिला समेत 28 लोगों को पुलिस ने गंभीर धाराओं में केस दर्ज कर मंगलवार को जेल भेज दिया। वहीं, घटना में शामिल पांच बाल अपचारी को भी पुलिस ने किशोर न्याय बोर्ड भेज दिया है। घटना के बाद से ही मुहल्ले के कई घरों के लोग फरार हैं। मामले की जांच के लिए पुलिस की ओर से सीसीटीवी फुटेज को खंगाल जा रहा है। सीसीटीवी फुटेज में पथराव व पिटाई कर रहे कई अन्य युवकों को भी पुलिस ने चिह्नित किया है, जिनकी तलाश की जा रही है। वहीं, सोमवार के बाद मंगलवार को भी मुहल्ला पुलिस छावनी में तब्दील रहा। इस दौरान चप्पे–चप्पे पर पुलिस के जवान तैनात किए गए थे। इसके अलावा घटना की जांच को लेकर अन्य तरीके से भी इनपुट निकाले जा रहे हैं।दोपहर बाद पुलिस विभाग की लोकल इंटेलिजेंस यूनिट भी मामले की जांच करने छावनी में पहुंची थी।

टेढ़ी नदी में कूदकर युवक ने दी जान

संवाददाता–गोण्डा। टेढ़ी नदी में कूदकर मंगलवार को एक युवक ने जान दे दी। घटना की जानकारी होते ही मौके लोगों की भीड़ जुट गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। आत्महत्या कारण मानसिक तनाव बताया जा रहा है। पुलिस के अनुसार थाना कटरा बाजार अंतर्गत ग्राम परवानपुर निवासी छव्व नारायण तिवारी पुत्र ईश्वर शरण तिवारी मंगलवार सुबह बहराइच के लिए निकला था। लेकिन वह बहराइच न जाकर बालपुर पहुंच गया। जहां टेढ़ी नदी पुल पर अपने बाइक खड़ी करके नदी में छलांग लगा कर आत्महत्या कर ली। सुबह 11 बजे की घटना होने के बाद पुल पर सैकड़ों लोग इकट्ठा हो गए और पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंचे चौकी प्रभारी बालपुर और कोतवाली देहात की पुलिस ने शव को नदी से बाहर निकलवाया। घटना की जानकारी होते ही परिजनों में कोहराम मच गया।

कोर्ट परिसर में अवैध पिस्टल के साथ युवक गिरफ्तार

संवाददाता–गोण्डा। सिविल कोर्ट परिसर में अवैध पिस्टल के साथ घुसे युवक को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पूछताछ में उसकी पहचान आशीष सिंह निवासी कटी तिराहा थाना नवाबगंज के रूप में हुई। प्रभारी निरीक्षक मनोज पाठक ने बताया कि आरोपित पर आयुध अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की गई। सूत्रों का कहना है कि आरोपी युवक एक जनप्रतिनिधि के नाम पर लोगों पर रौब गालिब करता था। इसी इरादे से वह न्यायालय परिसर में घूम रहा था। सोमवार को कोर्ट की सुरक्षा में भारी चूक सामने आई है। आरोपी युवक अवैध पिस्टल के साथ न्यायालय परिसर में प्रवेश कर गया। इसकी भनक जब न्यायालय सुरक्षा में तैनात निरीक्षक को लगी तो उन्होंने टीम के साथ घेरा बंदी कर आरोपी को हिरासत में लिया। पुलिस पूछताछ में आरोपी पिस्टल का लाइसेंस नही दिखा सका। इस पर प्रकरण में न्यायालय सुरक्षा में तैनात पुलिस निरीक्षक शरदेंदु कुमार पाण्डेय ने नगर कोतवाली में मुकदमा दर्ज करवाया है। निरीक्षक ने दी गई तहरीर में कहा कि सोमवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पास संदिग्ध व्यक्ति की तलाशी में अवैध पिस्टल बरामद की गई है। मांगे जाने पर आरोपी शस्त्र लाइसेंस नहीं दिखा सका। जनप्रतिनिधिक का करीबी बनकर दिखाता था धौंसरू सूत्रों की माने तो पकड़ा गया आरोपी एक विधायक का प्रतिनिधि बताकर धौंस जमाया करता था। लोगों की मानें तो कई बार पुलिस कर्मियों से उसकी नोकझोक भी हुई है। सोमवार को भी पकड़े जाने के दौरान उसने विधायक का करीबी बताकर धौंस जमाने की कोशिश की। लेकिन इस बार उसकी पुरानी ट्रिक काम नही आई और पुलिस ने दबोच लिया। पुलिस ने जरूरी लिखा पढ़ी करने के बाद आरोपी को न्यायालय भेज दिया है।

उम्मीद परियोजना से परिवार नियोजन कार्यक्रम को मिलेगा बल

संवाददाता–श्रावस्ती। परिवार नियोजन की सेवाओं की पहुंच तथा गुणवत्ता बढ़ाने के लिए पॉपुलेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया की ओर से उम्मीद परियोजना प्रारम्भ किया गया है। जिसका शुभारंभ सीएमओ डा एपी सिंह ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए सीएमओ ने कहा कि साल 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल आबादी का 16 प्रतिशत आबादी उत्तर प्रदेश में रहती है और यह साल 2030 तक बढ़कर 19 प्रतिशत तक हो जाएगी। यानि भारत में रहने वाला लगभग हर पांचवा व्यक्ति उत्तर प्रदेश का होगा। बढ़ती जनसंख्या के स्थिरीकरण तथा प्रदेश के प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए बच्चों, योग्य दंपति, गर्भवती, युवा एवं बुजुर्गों के स्वास्थ्य के लिए प्रदेश सरकार को नवाचार के माध्यम से कार्य करने की आवश्यकता है। परिवार नियोजन की सेवाओं की पहुंच तथा गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए हुए मोबियस फाउंडेशन की वित्तीय सहायता से पॉपुलेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया की ओर से जिले के तीन ब्लॉकों जमुनहा, हरिहरपुर रानी व सिरसिया में यह योजना प्रारंभ की गई है।

मनबढ़ों ने की फायरिंग,अब पुलिस के निशाने पर सर्किट हाउस रोड

संवाददाता–गोरखपुर। शहर के पर्यटन स्थल रामगढ़ताल नौका विहार और आसपास इलाके में मनबढ़ों पर शिकंजा कसने का पुलिस ने प्लान तैयार किया है। कार सवार पर दिन दहाड़े फायरिंग की घटना के बाद सर्किट हाउस रोड पुलिस के निशाने है। एसपी सिटी अभिनव त्यागी की अगुवाई में जहां पुलिस पेट्रोलिंग बढ़ा दी गई है। वहीं उल्लास के नाम के उत्पात मचाने वालों को काबू करने का प्लान तैयार किया गया है। पुलिस ऐसे मनबढ़ों के खिलाफ सख्ती बरतेगी, जिनकी वजह से माहौल खराब हो रहा है। बीते दिनों सर्किट हाउस के पीछे सुरहिया टोला, वैशाली कॉलोनी में विपिन कन्नौजिया की कार पर मनबढ़ों ने फायरिंग की थी। तीन अक्टूबर को हुई घटना के बाद पुलिस ने सक्रियता बढ़ा दी है। घटना से नौकायन पर जाने वाले लोगों में दहशत फैल गई थी। इसलिए पुलिस ने सख्ती का मन बनाया है। नौकायन पर मनबढ़ों की हरकत को रोकने के लिए पुलिस की अलग–अलग पेट्रोलिंग पार्टी तैनात की गई है। यह पुलिस टीम मोबाइल रहकर गतिविधियों पर नजर रखेगी। रामगढ़ताल के नौकायन क्षेत्र में प्रेक्षागृह के आसपास, चंपा देवी पार्क सहित अन्य जगहों पर पियक्कड़ जुटते हैं। बीयर और शराब पीकर भी कुछ लोग उधम मचाते हैं। कभी बाइक और कार खड़ी करके शराब पीते हैं। ऐसे लोगों के वाहन को सीज करने की तैयारी है।

नौकायन से लेकर सर्किट हाउस और आसपास इलाकों में सड़क पर उत्पात मचाना, बर्थडे मनाने के बहाने हुड़दंग मचाने पर कार्रवाई होगी। रील बनाने के बहाने किसी को परेशान करने या माहौल बिगाड़ना भी भारी पड़ेगा। स्टंटबाजी करने पर भी पुलिस कड़ी कार्रवाई करेगी। न सिर्फ चालान काटा जाएगा बल्कि जेल जाने की नौबत आ सकती है। अभिनव त्यागी, एसपी सिटी ने कहा कि नौकायन पर जाने वाले पर्यटकों की सुरक्षा के लिए सख्ती बढ़ाई गई है।

हेलमेट–सीटबेल्ट बिना ऑफिस आना अधिकारियों और कर्मचारियों को अनुपस्थित माना जाएगा –डीएम

संवाददाता–अम्बेडकरनगर। यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले अधिकारियों तथा कर्मचारियों की अब खैर नहीं है। बिना हेलमेट और सीटबेल्ट लगाए वाहन से आफिस आने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को अनुपस्थित माना जाएगा। आमजन को यातायात नियमों का पाठ पढ़ाने व नियमों का पालन करने के लिए बाध्य करने से पूर्व अपने अधिकारियों तथा कर्मचारियों से अनुपालन कराना होगा। मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने इसका कड़ाई से पालन का निर्देश दिया है। जिलाधिकारी अविनाश सिंह ने कहा कि विभागध्यक्षों को इसके लिए निर्देशित कर दिया गया है। परिवहन विभाग सड़क पर सुरक्षित यातायात बनाने के लिए 15 दिवसीय सड़क सुरक्षा अभियान चल रहा है। यातायात नियमों का जनता से पालन कराने से पहले नियमों का अनुपालन कराने वालों को स्वयं इसका पालन करना होगा। इसके लिए मुख्य सचिव ने सबसे पहले अधिकारियों तथा कर्मचारियों को स्वयं यातायात नियम का पालन करने के लिए बाध्य किया है।

पुलिस ने तीन लोगों को किया गिरफ्तार

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। ढेबरुआ पुलिस ने बढ़नी कस्बे में रविवार को हुए बवाल के मामले में मंगलवार को तीन और लोगों सैयद मोहम्मद पुत्र मेहंदी हसन निवासी गोला बाजार, राहुल पुत्र राम कृपाल निवासी रामलीला मैदान व पंकज चौहान पुत्र स्वर्गीय बल्ली निवासी आंबेडकरनगर मुड़िला को गिरफ्तार कर लिया है। थानाध्यक्ष संतोष कुमार सिंह ने बताया कि मामले में अब तक दोनों पक्षों से 11 लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है।

दीपोत्सव की तैयारियां शुरू, 25 लाख दीयों से जगमग होगी रामनगरी

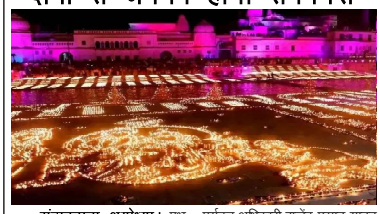

संवाददाता–अयोध्या। प्रभु राम की नगरी अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के बाद ये पहला दीपोत्सव बेहद खास होने वाला है। अयोध्या का दीपोत्सव इस बार और भव्य और दिव्य होने जा रहा है। इस बार 8 लाख दीयों को सरयू के 55 घाटों के साथ भजन संध्या स्थल पर भी बिछाए जाने के लिए कहा गया है, जबकि इस बार का लक्ष्य 25 लाख दीयों का रखा गया है। 40 लाख रुई की बत्तियां इन दीयों को प्रज्वलित करने के लिए लगाई जाएंगी। दीपोत्सव 2024 के लिए 32 लाख दीए खरीदे जाएंगे। रामपथ पर निकलने वाली 18 झांकियों की 3 किलोमीटर लंबी शोभायात्रा के लिए संस्कृति विभाग और पर्यटन विभाग की तरफ से झांकियों का निर्माण का काम शुरू कर दिया गया है। अयोध्या का दीपोत्सव 25 लाख से ज्यादा दीयों से जगमग होगी। अयोध्या योगी सरकार ने दीपोत्सव की तैयारी तेज कर दी है। राम अयोध्या जनपद के पर्यटन अधिकारी राजेंद्र प्रसाद यादव ने आयोजन के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इस बार दीपोत्सव में जो 25 लाख दीयों का लक्ष्य रखा गया है उसके तहत हम लोग 28 लाख दीए राम की पैढी के साथ भजन संध्या स्थल पर बिछाएंगे। अवध ा विश्वविद्यालय ने अपना टेंडर खोल लिया है. मुख्यालय पर्यटन निदेशालय ने भी अपना टेंडर खोल लिया है। उन सब की प्रेजेंटेशन और समीक्षा चल रही है। जल्द ही एजेंसियों को काम का आदेश जारी कर दिया जाएगा। इस बार स्थल बढ़ाए गए हैं क्योंकि डिपो की संख्या बढ़ाई गई हैं। इन सभी कार्यक्रमों के पहले अयोध्या के राम पथ पर रामायण की झांकियां मार्ग को सुशोभित करते हुए राम कथा पार्क तक पहुंचेंगे। लगभग 3 किलोमीटर कि यात्रा में 18 से ज्यादा झांकियां शामिल होंगी। इन सभी कामों को पूरा करने के लिए संबंधित विभागों ने तैयारियां शुरू कर दी हैं।

दुर्गा अष्टमी पूजन पर दुर्गा सप्तशती पाठ एवं शस्त्र पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न

संवाददाता–गोरखपुर। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी विश्व हिंदू परिषद की दुर्गा वाहिनी मातृ शक्ति गोरक्ष प्रांत के तत्वाधान में दुर्गा अष्टमी पूजन पर दुर्गा सप्तशती पाठ एवं शस्त्र पूजन का कार्यक्रम गोरखपुर महानगर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर आर्य नगर में किया गया।

कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता गोरखपुर विश्वविद्यालय की प्रोफेसर सुषमा पांडेय मुख्य अतिथि मेजर विनीता पाठक रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता विशिष्ट अतिथि प्रसिद्ध समाजसेवी सुध ा मोदी ने किया।कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित किया गया। तत्पश्चात कार्यक्रम में उपस्थित मातृ शक्तियों के साथ शस्त्र की पूजा हुई एवं आराध्य शक्ति स्वरूपा मां को याद किया गया।उपस्थित मातृशक्ति को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता प्रोफेसर सुषमा पांडे ने कहा कि महिलाओं के शास्त्र और शस्त्र ज्ञान से बच्चों में भी प्रतिभा का विकास होता है। मातृशक्ति के बिना सनातन समाज अधूरा है इसलिए हम माताओं –बहनों को बढ़–चढ़कर कार्य करना चाहिए। इस शस्त्र पूजन के अवसर पर हम संकल्प लें की हमें स्वयं शस्त्रों से सुसज्जित होकर अपने पीढ़ी को भी शास्त्र और शस्त्र की शिक्षा देनी है ताकि हमारा देश और हमारा धर्म दोनों सुरक्षित रह सके। उन्होंने आगे कहा कि आज के परिवेश में मातृशक्ति को आगे बढ़कर के देश निर्माण के कार्य में हिस्सा लेना चाहिए आज कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो मातृशक्ति से अछूता रह गया हूं। जिस भी क्षेत्र में हमारी बहन जा रही हैं उस क्षेत्र में अपने उन्नति का नया आयाम स्थापित कर रही है। आज के परिवेश में विश्व हिंदू परिषद उक्त कार्यक्रम के माध्यम से मातृशक्ति में दूसरों के संघार एवं परिवार में संस्कार का संदेश देने का कार्य कर रहा है।

उपस्थित मातृशक्ति को संबोधित करते हुए मेजर विनीता पाठक ने कहा कि भारत की मातृशक्ति सीता और पार्वती सी सौम्यता रखने के साथ साथ आवश्यकता पड़ने पर माँ काली और चण्डी की भांति रौद्र रूप अपना सकती हैं। वीरांगना लक्ष्मीबाई की भांति कम आयु में राष्ट्रहित प्राणों की भेंट चढ़ा सकती हैं तो प्रयास कर संस्कृति की रक्षा हेतु धर्मशाला, मंदिर, तीर्थस्थलों का निर्माण करने के साथ राज्य की चहुंमुखी उन्नति कर सकती है। मातृशक्ति में इसी भावना को जागृत करने के लिए हम सब जगत जननी मां दुर्गा की पूरा पूजा आराधना करते है।

अध्यक्ष उद्‌बोधन में प्रसिद्ध समाजसेवी सुधा मोदी ने कहा कि अगर महिला ठान ली तो निश्चित तौर पर समाज की समस्त बुराइयों को वह समाप्त कर सकती है और संस्कार देने का काम प्रथम महिला (मां) के द्वारा होता है और वहीं से सभ्य समाज के निर्माण की नीव पड़ती है अतः हम सभी को एक नया और सुंदर सुसंस्कृ त सनातन भारत के निर्माण करने में अपना योगदान देने की आवश्यकता है।

संचालन संपदा द्विवेद्वी एवं आचार पद्धति विभाग मंत्री शीतल ने कराया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रांत संगठन मंत्री राजेश जी प्रांत प्रचार प्रमुख दुर्गेश त्रिपाठी माया गुप्ता रागिनी श्रीवस्तवा रीता शर्मा रूप रानी जिला अध्यक्ष विष्णु प्रताप सिंह शीतल मिश्र सुनीता शर्मा संगीता मद्धेशिया लक्ष्मी रोली अग्रवाल मधु पोद्दार मेघा पोद्दार सौम्या कुशवाहा मुक्ता गुप्ता संगीता गुप्ता नमिता उषा राजकुमारी मुक्ता गुप्ता सुनीता संगीता संगीता पांडे मीरा अग्रवाल मीरा गुप्ता कनिष्का दीपमाला समेत भारी संख्या में मातृशक्ति के कार्यकर्ता उपस्थित रहे हैं।

बजरंग अखाड़े में नई पौध दिखाएगी शौर्य व वीरता की गाथा

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। नवरात्र में देवी प्रतिमा स्थापना के बाद चंहुओर उल्लास का माहौल है। शोहरतगढ़ में भी जगह–जगह प्रतिमा स्थापित हो चुकी है। नवरात्र की पंचमी बीत चुकी है। अब कस्बे में मूर्ति विसर्जन की रात शोभायात्रा के आगे–आगे चलने वाले बजरंग अखाड़ा को सजाने की तैयारी चल रही है। इस अखाड़े में नई पौध हथियारों की कलाबाजी से शौर्य व वीरता की गाथा का प्रदर्शन करेगी। इसके लिए कई जगहों पर अखाड़े संचालित कर नई पौध को कला के अलग–अलग गुर सिखाए जा रहे हैं। इस अखाड़े में 70 वर्षों से चली आ रही परंपरा को देखने को मिलेगा।

शौर्य व वीरता के दम पर भारत विश्व में अपना परचम फहराता रहा है। इसी वीरता की कहानी को सहेजने के लिए श्रीनव दुर्गापूजा सेवा संचालन समिति शोहरतगढ़ में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी देवी दुर्गा की विदाई की अंतिम रात निकलने वाली शोभायात्रा में आगे–आगे बजरंग अखाड़ा चलाएगी। इस अखाड़े में नई पौध शौर्य व वीरता की गाथा को प्रदर्शित करे इसके लिए गड़ाकुल, श्रीराम जानकी मंदिर, डोई नदी, शिव बाबा मंदिर खुनुवा बाईपास मार्ग पर आदि स्थानों पर तलवार, बल्लम, फरसा, फरसा, दंड, आग की कला आदि चलाने की कला सिखाया जा रहा है। शोहरतगढ़ में इस परंपरा की शुरुआत वर्ष 1954 में हुई, तबसे लोगों ने इसे सहेज रखा है। बजरंग अखाड़े का नेतृत्व करने वाले रामवृक्ष कन्नौजिया बताते हैं कि अखाड़े में हथियारों की कलाबाजी बुजुर्गों की विरासत है। इसे सहेजना व संवारना नई पीढ़ी की जिम्मेदारी है। यह कलाबाजी दुश्मनों को परास्त करने की प्रेरणा देती है। इन्हीं कलाओं की बदौलत भारत ने विश्व में अपना परचम फहराया है। संचालन समिति के पूर्व अध्यक्ष रामसेवक गुप्त बताते हैं कि अखाड़ा समाज में मान, सम्मान व स्वाभिमान की रक्षा की प्रेरणा देता है। इसे सहेजना समय की जरूरत है। गौरव का विषय है कि अखाड़े में स्थानीय युवाओं के साथ–साथ ग्रामीण अंचल से बुजुर्गों मेहमानों को भी हुनर दिखाने का अवसर मिलता है।

आजादी के दरमियान कस्बे में रामलीला आयोजित होता था लेकिन समय की अंगड़ाई ने रामलीला को कोसो दूर छोड़ देवी प्रतिमा बैठाने की नींव डाल दिया। नवरात्र में नौ दिनों तक रामलीला आयोजित होता था, जिसका समापन विजयादशमी के दिन होता था। रामलीला की झांकियों के पीछे पूरी रात अखाड़ा चलता था, वही परंपरा आज भी चली आ रही है। विसर्जन की रात दुर्गा प्रतिमा के आगे–आगे बजरंग अखाड़ा चलता है।

अखाड़े में खेलने वाले बजरंगी डंके की थाप पर कलाओं का प्रदर्शन करेंगे। संचालन समिति के पूर्व अध यक्ष रामसेवक गुप्त बताते हैं कि भगवान राम ने रावण का वध, हनुमान ने लंका दहन, मां दुर्गा ने शुंभ–अशुंभ दानवों का वध कर खुशियां मनाई थी। उसी तरह विसर्जन की रात देवी दुर्गा की विदाई के दौरान खुशियों का डंका बजेगा। इसी डंके की थाप पर बजरंग अखाड़े में हथियारों की कला का प्रदर्शन होगा।

जुलूस में डीजे, आटो-ई रिक्शा, में बजा लाल घाघरा तो जुर्माना तय

संवाददाता–गोरखपुर। ऑटो और ई–रिक्शा में तेज आवाज में लाल घाघरा जैसे फूहड़ गाने और जुलूस में डीजे बजाए तो कार्रवाई होगी। प्रशासन ने नए कानून भारतीय न्याय संहिता की धारा–163 लागू कर दी है। इसके तहत नियमों का उल्लंघन करने पर वाहनों का चालान कर सीज किया जाएगा और जुर्माना भी भरना पड़ेगा। अपर जिला मजिस्ट्रेट (प्रशासन) पुरुषोत्तम दास गुप्ता ने त्योहारों और विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं के दृष्टिगत सभी थाना क्षेत्रों में तीन दिसंबर 2024 तक के लिए ये प्रतिबंध लगा दिए हैं। पहले आईपीसी की धारा–144 थी, अब नए कानून के तहत भारतीय न्याय संहिता की धारा 163 हो गई है। नए कानून में ऑटो व ई–रिक्शा में तेज आवाज अथवा अश्लील संगीत नहीं बजाना है। इसके अलावा रात 10 बजे से सुबह छह बजे तक लाउडस्पीकर बजाने पर रोक लगा दी गई है। जुलूसों में डीजे पर प्रतिबंध रहेगा। ध ार्मिक पर्व पारंपरिक रूप से आयोजित होंगे, कोई भी नई प्रथा अथवा नए रूट का प्रयोग नहीं किया जाएगा। नए कानून में कोई भी व्यक्ति अपने घर के सामने, आंगन, बरामदे अथवा छत पर ईंट, पत्थर, तेजाब या ऐसी वस्तु नहीं रखेगा, जिससे फेंक कर मारे जाने से चोट लगे। अपर जिला मजिस्ट्रेट (प्रशासन) ने 33 बिंदुओं को इंगित करते हुए आदेश जारी कर दिया है। साथ ही चेतावनी दी है कि अगर इसका उल्लंघन करते पाया गया तो कार्रवाई की जाएगी।

शिक्षा से राष्ट्र निर्माण और समाज कल्याण पर हुआ विमर्श

संवाददाता–गोरखपुर। डीएवी पीजी कॉलेज और पीएचएसएस फाउंडेशन, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को 'शिक्षा विमर्श का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षा और राष्ट्र निर्माण, शिक्षा और समाज कल्याण, शिक्षा और सतत विकास, शिक्षा और कौशल विकास पर चार सत्रों में वक्ताओं ने अपने विचार रखे। मुख्य अतिथि उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा ने शिक्षा और पाठ्यक्रम की वर्तमान समय में उपयोगिता और विकास को पारिवारिक स्तर पर सुदृढ़ करने पर बल दिया। फाउंडेशन के महासचिव प्रो. राणा प्रताप सिंह ने कहा कि शिक्षा एवं शोध को व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करते हुए सुगम बनाया जा सकता है। डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय ने कहा कि शिक्षा द्वारा ही अनुशासित एवं आदर्श नागरिकों का निर्माण किया जा सकता है। अध्यक्षता प्राचार्या प्रो. शैल पाण्डेय ने की। कार्यक्रम में प्रतिभाग करने वाले सरस्वती विद्या मन्दिर, मारवाड़ बिजनेस कालेज व इस्लामिया कॉलेज ऑफ कामर्स के छात्र–छात्राओं को प्रमाणपत्र मेडल प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया। मुख्य अतिथि ने डॉ. आशाराम वर्मा द्वारा प्रकाशित पुस्तक का विमोचन किया। इस अवसर पर डॉ. संजय पाण्डेय, डॉ. संजय मिश्र, डॉ. संजय कुमार, डॉ. सीबी सिंह सेंगर, डॉ. सुमन सिन्हा, डॉ. विश्वदीपक सिंह, डॉ अभिषेक गुप्ता, डॉ. रक्षा गुप्ता आदि मौजूद रहे।

नशे में सो गया चालक, ई-रिक्शा हो गया चोरी

संवाददाता–गोरखपुर। सीतापुर आई हॉस्पिटल के पास स्थित अंग्रेजी शराब की दुकान के पास नशे की हालत में सोना एक ई–रिक्शा चालक को महंगा पड़ गया। जब वह होश में आया तो ई–रिक्शा चोरी हो गया था। कैंट पुलिस केस दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

आजाद नगर निवासी बृजराज गौड़ ई–रिक्शा चलाते हैं। 17 सितंबर को अपने ई–रिक्शा से वारी लेकर सीतापुर आई हॉस्पिटल गया। वहां पर एक अंग्रेजी शराब की दुकान के पास ही शराब पिया और फिर वहीं पर सो गया। देर रात उसकी आंख खुली तो ई–रिक्शा चोरी हो गया था। काफी परेशान होने के बाद पुलिस को सूचना दी। लेकिन, पुलिस ने केस दर्ज नहीं किया था। अब पुलिस इस मामले में केस दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

क्रेन की चपेट में आने से पुस्तक व्यापारी की मौत

संवाददाता–गोरखपुर। गोरखनाथ क्षेत्र के बरगदवा स्थित कॉम्प्लेक्स के पास मंगलवार को सड़क पारकर रहे पुस्तक व्यापारी की क्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। सूचना पर पहुंची चिलुआताल पुलिस ने क्रेन चालक को हिरासत में ले लिया। वह क्रेन छोड़ कर भागने का प्रयास कर रहा था। बरगदवा से नकहा क्रॉसिंग की तरफ जाने वाली सड़क पर कॉम्प्लेक्स के पास सड़क पार करते समय पुस्तक व्यापारी उमेश राजलानी (50) की क्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। उमेश काफी दिनों से अपनी पत्नी एवं बेटी खुश्बू के साथ विकासनगर में ही किराये का मकान लेकर परिवार के साथ रह कर बरगदवा फर्टिलाइजर मार्ग पर खुशबू बुक डिपो के नाम से दुकान चलाते थे। स्थानीय लोगों के मुताबिक 9रू30 बजे उमेश राजलानी दुकान खोलने के बाद सड़क पार कर पेशाब करके वापस दुकान आ रहे थे। उसी दौरान सामने से आए क्रेन चालक ने उमेश को कुचल दिया।

स्थानीय लोगों की मदद से उन्हें मेडिकल कालेज ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। वह मूल रूप से जयपुर के निवासी थे। काफी दिनो से पत्नी हीरा राजलानी एवं बेटी खुश्बू के साथ किराये का कमरा लेकर रह कर दुकान चलाकर जीवन यापन कर रहे थे। घटना से परिवार पर वज्रपात टूट पड़ा है।

युवती ने नहर में कूदकर दी जान

संवाददाता–अम्बेडकरनगर। सलाई–कढ़ाई केंद्र से घर लौटने के दौरान युवती ने थाना क्षेत्र के कपुरी मोहम्मदपुर स्थित शारदा सहायक नहर में कूदकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर छानबीन शुरू कर दी है। कपुरी मोहम्मद गांव के बगल से गुजर रही शारदा सहायक नहर के निकट एक युवती पहुंची। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार कुछ देर वहां मोबाइल पर रोते हुए बात करने के बाद उसने नहर में छलांग लगा दी। यह देख आसपास के लोग घटनास्थल की तरफ दौड़ पड़े। स्थानीय गोताखोरों को बुलाकर युवती को बाहर निकलवाकर सीएचसी बसखारी ले जाया गया। वहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

दो बड़ी चोरियों को खोलने की कड़ी तलाश रही पुलिस

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। इटवा कस्बे में सोमवार को दिन दहाड़े अलग–अलग जगहों पर दो बड़ी घटनाएं हुई थीं। बढ़नी रोड पर व्यापारी के डीसीएम से पांच लाख चौर सौ रुपये नगदी व बिस्कोहर रोड पर स्वर्ण व्यवसायी के बाइक की डिग्गी से उच्चकों ने 1.300 किलो चांदी के आभूषण को उड़ा लिया था। पुलिस चोरी का केस दर्ज कर मामले के खुलासे के लिए कड़ियों को जोड़ने के लिए जांच पड़ताल कर रही है। फिलहाल पुलिस, एसओजी व सर्विलांस टीम कामयाबी से अभी दूर है। इटवा कस्बा निवासी सुभाष चन्द्र का कस्बे के बढ़नी रोड पर किराना की दुकान है। सोमवार को उन्होंने बलरामपुर जनपद के व्यापारी राजेश के यहां से चीनी मंगाई थी। डीसीएम पर चीन लदकर आई थी। सुभाष चन्द्र ने डीसीएम चालक को 5 लाख 400 रुपये भुगतान कर दिया था। रुपया लेकर चालक दुकान से 200 मीटर दूर खड़ी डीसीएम के पास गया और सीट पर रखकर गाड़ी के पीछे ढाल का दरवाजा बंद करने लगा। इसी बीच किसी उच्चके ने सीट से रुपये उड़ा लिया था। दूसरी घटना मस्जिदिया बिस्कोहर रोड निवासी अशोक सोनी के साथ हुई थी। सोमवार को वह अपनी बाइक से इटवा आए थे। उनके बाइक की डिग्गी में 1 किलो 300 ग्राम चांदी के जेवर रखे हुए थे। बिस्कोहर रोड पर गाड़ी खड़ी करके बगल में कुछ काम करने चले गए। वापस आए तो देखा कि डिग्गी का लाक टूटा था और आभूषण गायब थे। दोनों ही मामलों में पुलिस ने तहरीर के आधार पर चोरी का केस दर्ज कर सोमवार से ही जांच शुरू कर दी थी। खुलासा के लिए इटवा पुलिस के साथ एसओजी व सर्विलांस टीम लगी है। घटना हुए चौबीस घंटे बीत गए लेकिन अब तक पुलिस के हाथ खाली ही हैं। वह कड़ियों को जोड़ कर घटना के खुलासा के करीब पहुंचने की कोशिश में है फिर भी कामयाबी दूर है। थानाध्यक्ष श्रीप्रकाश यादव ने बताया कि दोनों घटनाओं में केस दर्ज है। जांच पड़ताल की जा रही है। जल्द ही मामले का खुलासा कर दिया जाएगा।

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)
वाद सं0– /2024
अदालत– श्रीमान जिलाधिकारी महोदय बस्ती जिला–बस्ती
रामचन्दर
बनाम
सरकार उ0प्र0
1. सरकार उ0प्र0 जरिये कलेक्टर बस्ती 2. सन्तराम पुत्र वासदेव 3. हृदयराम पुत्र वासदेव निवासीगण ग्राम मड़वानगर तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला–बस्ती
तारीख पेशी 10–10–2024

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 10 माह 10 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)
वाद सं0–D202417140000077
धारा 30(1) उ0प्र0रा0सं0 2006
अदालत– श्रीमान अपर जिलाधिकारी महोदय बस्ती जिला–बस्ती
ग्रीसचन्द्र
बनाम
विनोद कुमार आदि
1. विनोद कुमार 2. संतोष कुमार 3. सुनील कुमार 4. उत्तम कुमार 5. अशोक कुमार पुत्रगण राम कुमार 6. आशीष कुमार पुत्र विजयचन्द्र 7. श्रीमती गीता देवी पत्नी विजय चन्द्र 8. मनीष कुमार 9. अनीष कुमार पुत्रगण राम निहोर 10. श्रीमती प्रभा देवी पत्नी राम निहोर 11. मनोज कुमार 12. विनोद कुमार पुत्रगण रामसुमेर 13. श्रीमती शोहबता देवी पत्नी राम सुमेर साकिनान मौजा भोयर तप्पा कलवारी परगना नगर पूरव तहसील व जिला बस्ती
तारीख पेशी 21–10–2024

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 21 माह 10 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख 08 माह 10 सन 2024 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
वाद सं0– 380/2022
न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) खलीलाबाद महोदय बस्ती जिला–बस्ती
अलाउद्दीन
बनाम
संत नरायन
1. संत नरायन उम्र लगभग 40 वर्ष पुत्र सिद्धू साकिन मनिकौरा खुर्द तप्पा कपरी महसो परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला–बस्ती
तारीख पेशी 14–10–2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 14 माह 10 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बनाम कायम मुकाम कानूनी मुद्दाअलेह मुतवफ्फा
(आर्डर 22, कायदा 4)
अदालत–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) बस्ती जिला–बस्ती
मुतफरिका नम्बर 312/2019
श्रीमती अर्चना देवी
बनाम
राम कुबेर आदि
1/1 श्रीमती राम सिंगारी उम्र 65 साल पत्नी राम कुबेर 1/2 श्रीमती माना उम्र 35 साल 1/3 श्रीमती ज्ञानमती उम्र 28 साल पुत्रीगण राम कुबेर साकिनान ग्राम देवनाथपुर तप्पा दुबौलिया परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला–बस्ती
तारीख पेशी 15–11–2024

हरगाह मुद्दई ने एक नालिश इस अदालत में बतारीख माह सन 20 ई0 बनाम मुद्दाअलेह के रूजू की थी, जो बाद की मौत हरगाह मुद्दई मजकूर ने एक दरख्वास्त इस अदालत में गुजारी है कि आप मुतवफ्फा मजकूर का कायम मुकाम कानूनी वारिस है और चाहता है कि बजाय उसके मुद्दाअलेह बनाये जांय।

लिहाजा आपको हुक्म होता है कि बतारीख 15 माह 11 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे इस अदालत में हाजिर होकर मुकदमा मजकूर जबावदेही कीजिये और अगर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा वगैर हाजिरी आपके मसमूअ और फैसला होगा।

बवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–**दिनेश सिंह**
संयुक्त सम्पादक–**प्रदीप चन्द्र पाण्डेय**
अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो09450567450 9336715406,
ई.मेल**bhartiyabasti@yahoo.com**
bhartiyabasti@gmail.com